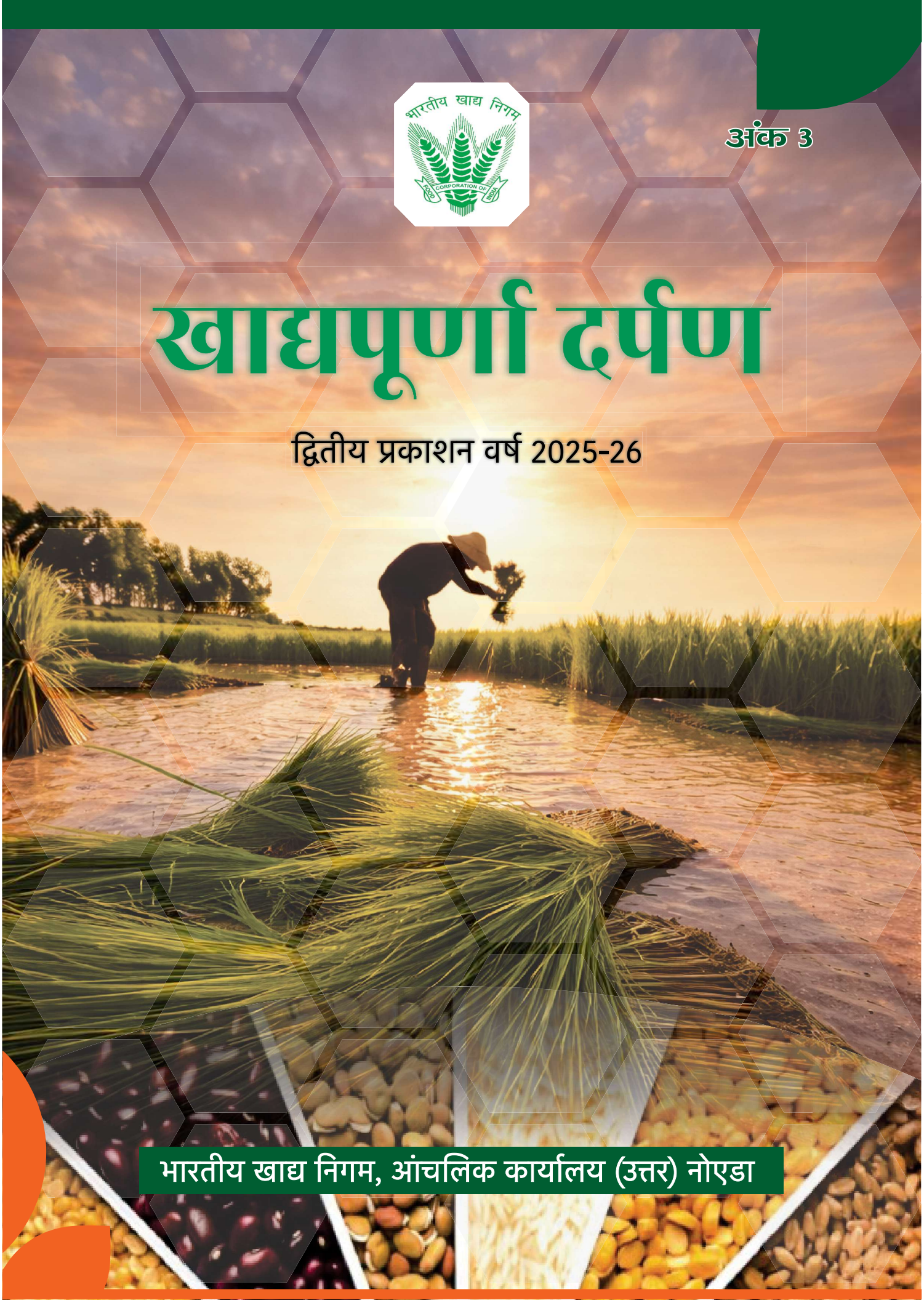

अंक 3

खाद्यपूर्णा दर्पण

द्वितीय प्रकाशन वर्ष 2025-26

भारतीय खाद्य निगम, आंचलिक कार्यालय (उत्तर) नोएडा

अंक 3

खाद्यपूर्णा दर्पण

द्वितीय - प्रकाशन वर्ष 2025-26

प्रधान संरक्षक
डॉ अजीत कुमार सिन्हा
कार्यकारी निदेशक (उत्तर)

संरक्षक
संदीप कुमार पाण्डेय
महाप्रबंधक (लेखा/राजभाषा)

मुख्य संपादक
डॉ ए.वी.राव
उप महाप्रबंधक (राजभाषा)

संपादक
पुखराज मीना
सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा)

सहयोग
पूजा सैनी, सहायक श्रेणी-I (राजभाषा)
रिमझिम, सहायक श्रेणी-I (राजभाषा)
नरेंद्र पांडेय, सहायक श्रेणी-II (राजभाषा)
रजनी मिश्रा, सहायक श्रेणी-II (राजभाषा)
अभिशेख कुमार साव, सहायक श्रेणी-III (राजभाषा)

(पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं की मौलिकता का दायित्व स्वयं रचनाकारों का है)

पत्र व्यवहार का पता:
आंचलिक कार्यालय (उत्तर)
भारतीय खाद्य निगम, ए-2ए-2बी, सैक्टर-24, नोएडा (उत्तर प्रदेश)
ई-मेल: ednorth@fci.gov.in
वेबसाईट : https://fci.gov.in/zone/north-zone

भारतीय खाद्य निगम, आंचलिक कार्यालय उत्तर नोएडा द्वारा नि:शुल्क तथा निजी वितरण हेतु प्रकाशित

इस अंक में ...

क्र.सं.	रचना	नाम	पृ.सं.
1	संदेश	संदेश	2-7
2	जमीं थोड़ी सी	अनुपम बी. व्यास - मुख्य महाप्रबंधक (सामान्य)	8
3	14 जनवरी का दिन FCI के बिन	संदीप कुमार पाण्डेय - महा प्रबंधक वित्त एवं राजभाषा	9
4	राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन में गृह पत्रिका का महत्व	डॉ. ए. वेंकटेश्वर राव - उप महाप्रबंधक (राजभाषा)	10-12
5	प्राचीन दृष्टिकोण के साथ प्रबंधन संबंधी सुझाव	संदीप कुमार पाण्डेय - महा प्रबंधक वित्त एवं राजभाषा	13-14
6	कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) और भारतीय खाद्य निगम (FCI) का भविष्य	संतोष कुमार कनौजिया - सहायक महाप्रबंधक (लेखा)	15-18
7	नजरिया	रिमझिम - सहायक श्रेणी प्रथम (राजभाषा)	19
8	बेटियां वरदान हैं..	रंजना पाठक. पत्नी: श्री अमित कुमार पाठक - महाप्रबंधक (वित्त व लेखा)	19
9	आइए बनाएं एक खुशहाल जहां	दीपक पाण्डेय - प्रबंधक (राजभाषा)	20
10	शून्यः एक जीवन दर्शन	रंजना पाठक. पत्नी: श्री अमित कुमार पाठक - महाप्रबंधक (वित्त व लेखा)	21
11	क्यों का सफ़र	निधि शालवार नागेन्द्र - सहायक महा प्रबंधक (सामान्य)	22
12	भरोसा पाता हूं मैं एवं मध्यांतर की उड़ान	आशीष अभिषेक गौतम - प्रबंधक (परिचालन)	23
13	खुशियाँ, डर, खुशियों के डाकू एवं खुशियों के पराजीवी	प्रदीप मिश्रा - प्रबंधक (परिचालन)	24-27
14	राजभाषा सेवी - निष्ठा और नियति	नरेन्द्र पाण्डेय - सहायक श्रेणी द्वितीय (राजभाषा)	27
15	किसको हाले दिल सुनाऊँ	सूर्यकान्त त्रिपाठी - सहायक श्रेणी तृतीय (राजभाषा)	28
16	कैसा हो व्यक्तित्व हमारा	गौरव झा - सहायक श्रेणी तृतीय (तकनीकी)	28
17	एफसीआई का डिजिटल दर्पण	पूजा कुमारी - सहायक श्रेणी द्वितीय (आगार)	29
18	कैसी आज़ादी?	वर्षा सक्सेना - सहायक श्रेणी तृतीय (आगरा)	30
19	शीर्षक: कार्यालय की दीवारों के भीतर—एक जीवंत संसार	पायल अग्रवाल - सहायक श्रेणी तृतीय (राजभाषा)	31-32
20	विकल्प	शरद भारद्वाज - प्रबंधक (परिचालन)	32
21	राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में संस्थाओं की भूमिका	रामअशीष प्रसाद - सहायक श्रेणी- द्वितीय (राजभाषा)	33-35
22	सतर्कता हमारी साझा ज़िम्मेदारी	अजय सिंह रोहिल्ला - प्रबंधक (राजभाषा)	35
23	खेलो का महत्व	हरेन्द्र सिंह - सहायक श्रेणी तृतीय (राजभाषा)	36
24	हिंदी : मेरी शिक्षा, मेरी चेतना और मेरा जीवन	मोनू मल्लिक - सहायक श्रेणी तृतीय(राजभाषा)	37-38
25	क्या यह, तुम्हारा अच्छा रूपईया?	बृजेश मिश्रा - सहायक श्रेणी द्वितीय (राजभाषा)	39
26	मुझे आदत है.....	उषा मीना - प्रबंधक (परिचालन)	40
27	अपने कलम से मैं हर बात लिखती हू	मोनिका राठी - सहायक श्रेणी तृतीय (तक.)	41
28	हौसलों की उड़ान	आयुष कुमार - सहायक श्रेणी तृतीय (आगार)	41
29	जागरूक मतदाताः जनतंत्र का प्रहरी	राम चन्द्र मीना - सहायक श्रेणी प्रथम (सामान्य)	42-43
30	रंगो का मौसम	राजेन्द्र प्रजापत - सहायक श्रेणी द्वितीय (राजभाषा)	43
31	राजभाषा : प्रशासन की आत्मा और राष्ट्र की आवाज	हितेश चोरडिया -सहायक श्रेणी तृतीय (राजभाषा)	44
32	नादान परिंदा	रजनी मिश्रा - सहायक श्रेणी द्वितीय (राजभाषा)	45
33	बसंत जब आती है	सुबोध कुमार तांती - सहायक श्रेणी-द्वितीय (राजभाषा)	45
34	प्रकृति का संतुलन	अभिषेक - सहायक श्रेणी-द्वितीय (सामान्य)	47
35	धुंध के दो संसार	अभिशेख कु. साव - सहायक श्रेणी तृतीय (राजभाषा)	47
36	उत्तर अंचल के कार्यालय प्रमुखों के लिए दो दिवसीय विशेष हिंदी कार्यशाला का आयोजन वाराणसी (उत्तर प्रदेश)		48
37	हिंदी पखवाड़ा 2025 के दौरान दिनांक 23.09.2025 को भव्य हिंदी कवि-सम्मेलन का आयोजन		49
38	हिंदी पखवाड़ा 2025 की कुछ झलकियां		50

रबिन्द्र अग्रवाल, भा.प्र.से.
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक
भारतीय खाद्य निगम, मुख्यालय

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि भारतीय खाद्य निगम, आंचलिक कार्यालय (उत्तर), नोएडा द्वारा अपनी राजभाषा गृह-पत्रिका "खाद्यपूर्णा दर्पण" के तीसरे अंक का प्रकाशन किया जा रहा है।

किसी भी संस्थान की गृह-पत्रिका केवल एक संकलन नहीं होती, बल्कि वह वहां के कार्मिकों की रचनात्मकता, वैचारिक अभिव्यक्ति और भाषाई दक्षता का दर्पण होती है। हमारा संवैधानिक उत्तरदायित्व है कि हम न केवल अपने दैनिक सरकारी कार्यों में हिंदी का प्रयोग बढ़ाएं, बल्कि इसे सरल, सुबोध और ग्राह्य भी बनाएं। गृह-पत्रिकाएं इस दिशा में एक सशक्त माध्यम के रूप में कार्य करती हैं, जहाँ अधिकारी व कर्मचारी अपनी लेखनी के माध्यम से हिंदी के प्रति अपने जुड़ाव को प्रदर्शित करते हैं।

मुझे विश्वास है कि यह पत्रिका सूचनात्मक होने के साथ-साथ प्रेरणादायी भी सिद्ध होगी। मैं इस पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ।

रबिन्द्र

(रबिन्द्र अग्रवाल)

डॉ. अजीत कुमार सिन्हा
कार्यकारी निदेशक (उत्तर)
भारतीय खाद्य निगम,
आंचलिक कार्यालय (उत्तर) नोएडा

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि आंचलिक कार्यालय (उत्तर) की गृह पत्रिका खाद्यपूर्णा दर्पण" का तृतीय अंक प्रकाशित हो रहा है। किसी भी संस्था की गृह पत्रिका केवल सूचना का माध्यम ही नहीं होती, बल्कि वह संगठन की कार्यसंस्कृति, विचारधारा तथा कर्मचारियों की रचनात्मक अभिव्यक्ति का सशक्त मंच भी होती है।

राजभाषा हिंदी हमारे प्रशासनिक, सांस्कृतिक तथा राष्ट्रीय दायित्वों का महत्वपूर्ण अंग है। भारतीय खाद्य निगम जैसे प्रतिष्ठित संगठन में कार्य करते हुए यह हमारा कर्तव्य है कि हम अपने कार्यालयीन कार्यों में हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग को बढ़ावा दें तथा इसे व्यवहारिक, सरल और प्रभावी बनाएं। इस प्रकार की पत्रिकाएँ राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कर्मचारियों की साहित्यिक प्रतिभा, अनुभवों और उपलब्धियों को अभिव्यक्त करने का उत्कृष्ट अवसर प्रदान करती हैं।

मुझे विश्वास है कि "**खाद्यपूर्णा दर्पण**" का यह अंक पाठकों के लिए ज्ञानवर्धक, प्रेरणादायक एवं रोचक सिद्ध होगा तथा राजभाषा हिंदी के संवर्धन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

इस पत्रिका के प्रकाशन हेतु संपादकीय मंडल एवं सभी सहयोगियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

(डॉ. अजीत कुमार सिन्हा)

अनुपम बी. व्यास
मुख्य महाप्रबंधक (सामान्य)
भारतीय खाद्य निगम,
आंचलिक कार्यालय (उत्तर) नोएडा

संदेश

राजभाषा हिंदी हमारी प्रशासनिक कार्यप्रणाली की आधारशिला है, जो संगठन के प्रत्येक स्तर पर पारदर्शिता, सहजता एवं प्रभावशीलता सुनिश्चित करती है। भारतीय खाद्य निगम जैसे राष्ट्रव्यापी संगठन में हिंदी का सशक्त और सार्थक प्रयोग हमारी जिम्मेदारी के साथ-साथ हमारा गौरव भी है।

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि हमारे आंचलिक कार्यालय में राजभाषा नीति के क्रियान्वयन हेतु निरंतर सकारात्मक प्रयास किए जा रहे हैं। अधिकारी एवं कर्मचारीगण कार्यालयीन कार्यों में हिंदी के प्रयोग को अपनाते हुए इसे व्यवहार में सुदृढ़ बना रहे हैं। यह प्रवृत्ति संगठनात्मक एकता और कार्यकुशलता को और अधिक मजबूत करती है।

'खाद्यपूर्णा दर्पण' हमारे इन प्रयासों का सजीव प्रतिबिंब है। यह न केवल हिंदी के प्रचार-प्रसार का प्रभावी माध्यम है, बल्कि विचारों, अनुभवों और रचनात्मकता को साझा करने का सशक्त मंच भी प्रदान करती है। मुझे विश्वास है कि यह पत्रिका सभी पाठकों को राजभाषा के प्रति और अधिक जागरूक एवं प्रेरित करेगी।

आइए, हम सब मिलकर राजभाषा हिंदी को अपने कार्य, व्यवहार और चिंतन में और अधिक समृद्ध बनाते हुए इसके गौरव को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाएँ।

आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएँ।

(अनुपम बी व्यास)

संदीप कुमार पाण्डेय
महाप्रबंधक (लेखा/ राजभाषा)
भारतीय खाद्य निगम,
आंचलिक कार्यालय (उत्तर) नोएडा

संदेश

"सजा रहे हो, तो फिर इसको ऐसा मत बिसारिये माँ के माथे की बिन्दी है, हिन्दी को अपनाईये"

राजभाषा हिंदी भारतीय प्रशासन की आत्मा है, जो हमें एक सूत्र में बाँधने का कार्य करती है। भारतीय खाद्य निगम में राजभाषा के प्रभावी कार्यान्वयन हेतु किए जा रहे सतत प्रयास यह प्रमाणित करते हैं कि हिंदी केवल संप्रेषण का माध्यम ही नहीं, बल्कि हमारी कार्यसंस्कृति का अभिन्न अंग बन चुकी है।

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि हमारा आंचलिक कार्यालय राजभाषा नीति के अनुपालन में निरंतर प्रगति कर रहा है तथा अधिकारी एवं कर्मचारीगण कार्यालयीन कार्यों में हिंदी के प्रयोग को प्राथमिकता दे रहे हैं। पत्राचार, टिप्पणियाँ, प्रतिवेदन, सूचना पट्ट एवं प्रशिक्षण कार्यक्रमों में हिंदी के बढ़ते प्रयोग से राजभाषा के प्रति हमारी प्रतिबद्धता स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है।

राजभाषा गृह पत्रिका इस सकारात्मक प्रयास को सशक्त मंच प्रदान करती है। यह न केवल हिंदी के प्रचार-प्रसार में सहायक है, बल्कि कर्मचारियों की रचनात्मक अभिव्यक्ति और वैचारिक सहभागिता को भी प्रोत्साहित करती है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका सभी पाठकों के लिए प्रेरणास्रोत सिद्ध होगी।

आइए, हम सब मिलकर राजभाषा हिंदी को व्यवहार में अपनाते हुए इसके गौरव को निरंतर ऊँचाइयों तक पहुँचाने का संकल्प लें।

(संदीप कुमार पाण्डेय)

डॉ. ए. वी. राव
उप महाप्रबंधक (राजभाषा)
भारतीय खाद्य निगम,
आंचलिक कार्यालय (उत्तर) नोएडा

संदेश

मुझे अत्यंत प्रसन्नता है कि भारतीय खाद्य निगम, आंचलिक कार्यालय (उ.) की राजभाषा गृह पत्रिका 'खाद्यपूर्णा दर्पण' का तृतीय अंक प्रकाशित हो रहा है। यह पत्रिका न केवल हमारी सृजनात्मक अभिव्यक्ति का मंच है, बल्कि राजभाषा हिंदी के संवर्धन, प्रसार और प्रभावी क्रियान्वयन की दिशा में एक सार्थक पहल भी है।

यह प्रसन्नता का विषय है कि ई. ऑफीस में हिंदी टिप्पणियों के क्षेत्र में हम एक सराहनीय मुकाम तक पहुँच चुके हैं। अब आवश्यकता है कि इसी उत्साह और प्रतिबद्धता के साथ हिंदी पत्राचार में भी उल्लेखनीय एवं व्यापक प्रगति सुनिश्चित की जाए, ताकि राजभाषा नीति का समग्र और संतुलित क्रियान्वयन हो सके।

साथ ही, यह अपेक्षित है कि राजभाषा अनुभाग से संबंधित सभी रिपोर्ट व्यवस्थित रूप में एवं निर्धारित प्रपत्र में समयबद्ध रूप से प्रेषित की जाएं, जिससे कार्यों की समुचित समीक्षा और अनुश्रवण संभव हो सके।

राजभाषा कार्यान्वयन को और अधिक सुदृढ़ बनाने हेतु वार्षिक कार्रवाई योजना का सुविचारित एवं चरणबद्ध निर्माण अत्यंत आवश्यक है। इस योजना के माध्यम से हम अपने लक्ष्यों को स्पष्ट रूप से निर्धारित कर उन्हें समयसीमा के भीतर प्राप्त करने की दिशा में सार्थक कदम उठा सकते हैं।

मैं सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से अपेक्षा करता हूँ कि वे राजभाषा हिंदी के प्रयोग को अपने दैनिक कार्यों में प्राथमिकता दें और इसे व्यवहारिक रूप से अपनाते हुए कार्यालय में हिंदी के वातावरण को और सशक्त बनाएं।

आप सभी से अपेक्षा है कि भविष्य में भी अपनी रचनाओं एवं सुझावों से इस पत्रिका को समृद्ध करते रहेंगे।

(डॉ. ए. वी. राव)

पुखराज मीना
सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा)
भारतीय खाद्य निगम,
आंचलिक कार्यालय (उत्तर), नोएडा

संपादक की कलम से

प्रिय सहकर्मियों/पाठकों,

भारतीय खाद्य निगम, आंचलिक कार्यालय (उत्तर) की राजभाषा गृह पत्रिका 'खाद्यपूर्णा दर्पण' के तृतीय अंक को आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करते हुए अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा है। इस अंक की रचनाओं को देखकर आप सहज ही यह अनुमान लगा सकते हैं कि यह पत्रिका हमारे कार्यालय में राजभाषा हिंदी के प्रभावी क्रियान्वयन के साथ-साथ साहित्यिक अभिरुचि और रचनात्मक अभिव्यक्ति को प्रोत्साहित करने का एक सशक्त माध्यम बन चुकी है।

राजभाषा केवल शासन की भाषा नहीं, बल्कि संवाद, सहभागिता और सांस्कृतिक एकात्मता का सेतु है। जब हम कार्यालयीन कार्य हिंदी में करते हैं, तो हम न केवल संवैधानिक दायित्व का निर्वहन करते हैं, बल्कि अपनी भाषायी अस्मिता को भी सुदृढ़ करते हैं। इसी उद्देश्य से यह पत्रिका हम सभी के विचारों, अनुभवों और रचनात्मक प्रयासों को एक मंच प्रदान करती है।

इस अंक में विविध विषयों पर आधारित लेख, कविताएँ एवं ज्ञानवर्धक सामग्री संकलित की गई है। प्रत्येक रचना अपने आप में विशेष है और हमारे सहकर्मियों की संवेदनशीलता, विचारशीलता तथा सृजनात्मक ऊर्जा का परिचायक है। हमें विश्वास है कि यह अंक पाठकों के लिए प्रेरणादायी सिद्ध होगा तथा राजभाषा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण को और सशक्त बनाएगा।

मैं सभी रचनाकारों, संपादकीय मंडल के सदस्यों तथा पत्रिका के प्रकाशन में सहयोग देने वाले अधिकारियों एवं कर्मचारियों का हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ। आप सभी से अनुरोध है कि भविष्य में भी अपनी मौलिक रचनाओं और सुझावों से 'खाद्यपूर्णा दर्पण' को समृद्ध करते रहें, ताकि यह पत्रिका निरंतर प्रगति की ओर अग्रसर होती रहे।

आपके सहयोग और सहभागिता की अपेक्षा के साथ।

(पुखराज मीना)

अनुपम बी. व्यास
मुख्य महाप्रबंधक (सामान्य)
आंचलिक कार्यालय (उत्तर) नोएडा

जमीं थोड़ी सी

जमीं थोड़ी सी, थोड़ा आसमान माँगता हूं मैं।
भला कब जिंदगी में, सायबान माँगता हूं मैं।।

तुफान ने जो आशियाना कर दिया बर्बाद
फिर से उसी की आन-बान माँगता हूं मैं।।

हूँ रह-गुजर का राहगीर, चलना ही है लाजिम
कहाँ रहने की खातिर, इक मकान माँगता हूं मैं।।

नाकाम कोशिशें रहीं, सूरज उगाने की
हाँ है तो अनोखा, अरमान माँगता हूं मैं।।

जिंदगी को जिंदगी देने से था इन्कार
छिना जो मुझसे वो जहान माँगता हूं मैं।

संदीप कुमार पाण्डेय
महाप्रबंधक (लेखा/ राजभाषा)
आंचलिक कार्यालय (उत्तर) नोएडा

14 जनवरी का दिन FCI के बिन

मैं ना भूलूँगा मैं न भूलूँगी
14 जनवरी का दिन, FCI के बिन
अपना यही धरम अपना यही करम
मैं ना भूलूँगा मैं न भूलूँगी १

धान की फलियाँ,गेहूँ की बलियां
गाँव के ठौर और गाँव की गलियाँ
हर कोई नाचे झूमे ताक धिना धिन तिन
मैं ना भूलूँगा मैं न भूलूँगी २

करता जा करम देश के नाम धरम
दिन हो या रात गरमी हो बरसात
हर घर खाना पहुँचे झूमें घर आँगन।
मैं ना भूलूँगा मैं न भूलूँगी ३

जीना हो या मरना अपना तो यही कहना
जब तक तन में साँस FCI का हर पल ख़ास
जग में जब तक रह पाऊँ मैं FCI तुझे नमन..
मैं ना भूलूँगा मैं न भूलूँगी ४

14 जनवरी का दिन FCI के बिन
अपना यही धरम अपना यही करम

डॉ.ए.वेंकटेश्वर राव
उप महाप्रबंधक (राजभाषा)
आंचलिक कार्यालय (उत्तर) नोएडा

राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन में गृह पत्रिका का महत्व

सरकारी कार्यालयों में गृह पत्रिका प्राकशन का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य और भूमिका होती है। गृह पत्रिका मुख्य रूप से कार्यालय की गतिविधियों को दर्शाती है। यदि यह राजभाषा से संबंधित हो तो कार्यालय में राजभाषा हिंदी से संबंधित गतिविधियों को अधिक महत्व दिया जाता है। गृह पत्रिका की भाषा कोई भी एक भाषा या बहु भाषा भी हो सकती है। राजभाषा गृह पत्रिका होने से बहु भाषा हो सकती है और इसमें अधिकतम हिंदी भाषा को महत्व देना है। इसीप्रकार अंग्रेजी के अलावा क्षेत्रीय भाषाओं के लेख इत्यादि भी शामिल किया जा सकता है।

गृह पत्रिका किसी भी कार्यालय, विभाग या संस्था की आंतरिक पत्रिका होती है, जो कर्मचारियों की रचनात्मक अभिव्यक्ति, विचारों और अनुभवों को मंच प्रदान करती है। यह केवल साहित्यिक लेखन तक सीमित न होकर राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार का एक सशक्त माध्यम भी है। गृह पत्रिका के माध्यम से कर्मचारियों को हिंदी में लेखन का अवसर मिलता है, जिससे उनमें हिंदी के प्रयोग के प्रति आत्मविश्वास बढ़ता है।

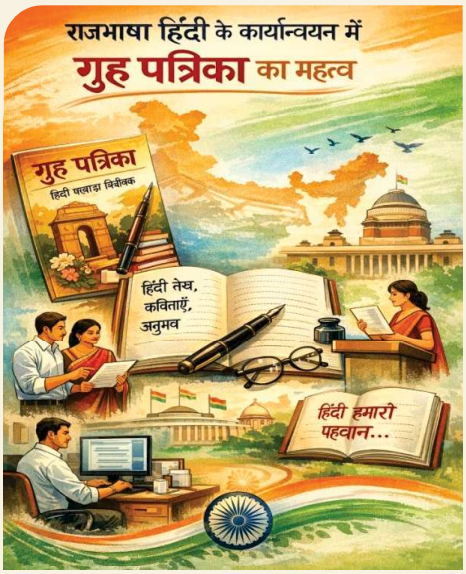

राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन में गृह पत्रिका की भूमिका बहुआयामी है। सबसे पहले, यह कर्मचारियों को कार्यालयीन कार्यों के अतिरिक्त हिंदी में सोचने और लिखने के लिए प्रेरित करती है। जब कर्मचारी लेख, निबंध, संस्मरण, कविता या अनुभव हिंदी में लिखते हैं, तो उनका भाषा ज्ञान स्वाभाविक रूप से विकसित होता है। यह अभ्यास आगे चलकर फाइल कार्य, टिप्पणियाँ और पत्राचार हिंदी में करने में सहायक सिद्ध होता है।

गृह पत्रिका राजभाषा संबंधी नीतियों, नियमों और उपलब्धियों के प्रचार का भी प्रभावी माध्यम है। इसके माध्यम से राजभाषा अधिनियम, नियम, वार्षिक कार्यक्रम, हिंदी पखवाड़े की गतिविधियाँ तथा उपलब्धियों की जानकारी सरल भाषा में सभी तक पहुँचाई जा सकती है। इससे कर्मचारियों में राजभाषा के प्रति जागरूकता और रुचि उत्पन्न होती है।

गृह पत्रिका प्रकाशन से पहले निम्नलिखित बिंदुओं पर विशेष ध्यान देना चाहिए :

1. पठन-संस्कृति का विकास और विषयगत ज्ञान:

पत्रिका के प्रकाशन अथवा उसमें लेखन से पूर्व विभिन्न पत्रिकाओं को पढ़ने की आदत विकसित की जानी चाहिए, जिससे लेखकों को विषय संबंधी ज्ञान प्राप्त हो सके और उनकी लेखन क्षमता में वृद्धि हो।

2. संपादकीय की भूमिका एवं मौलिक लेखन को प्रोत्साहन:

पत्रिका का संपादकीय भाग उसका एक अत्यंत महत्वपूर्ण अंश होता है। पत्रिका में प्रकाशित किए जाने वाले विषय विवाद-रहित, सकारात्मक तथा सहज भाषा में होने चाहिए। कार्मिकों को वेबसाइट आदि से सामग्री की नकल (कॉपी) करने की प्रवृत्ति को हतोत्साहित करते हुए स्वयं मौलिक लेखन के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। आवश्यकता पड़ने पर इस विषय पर लेखन कार्यशालाओं का आयोजन भी किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त, हिंदी में ज्ञानवर्धन हेतु विभिन्न विषयों पर कार्मिकों को अवगत कराना आवश्यक है।

3. राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने में गृह पत्रिका:

गृह पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग को बढ़ावा दिया जा सकता है। पत्रिका में प्रकाशित लेख, टिप्पणियाँ एवं अनुभव कर्मचारियों को कार्यालयीन कार्यों में हिंदी के प्रयोग के लिए प्रेरित करते हैं तथा उनमें भाषा के प्रति आत्मविश्वास उत्पन्न करते हैं।

4. कार्मिक सहभागिता एवं प्रोत्साहन की व्यवस्था:

पत्रिका के प्रकाशन में सभी स्तरों के कार्मिकों की सहभागिता सुनिश्चित की जानी चाहिए, जिससे संगठन में समन्वय एवं संवाद को प्रोत्साहन मिले। साथ ही, उत्कृष्ट लेखन के लिए कार्मिकों को प्रशस्ति-पत्र अथवा पुरस्कार देकर सम्मानित करने से हिंदी लेखन के प्रति रुचि और सहभागिता में वृद्धि होती है।

इसके अतिरिक्त, गृह पत्रिका कर्मचारियों की सहभागिता और आपसी जुड़ाव को भी सुदृढ़ करती है। विभिन्न अनुभागों और स्तरों के कर्मचारी जब अपने विचार साझा करते हैं, तो संगठनात्मक एकता और संवाद को बढ़ावा मिलता है। हिंदी के माध्यम से अभिव्यक्ति, भाषा के प्रति अपनत्व की भावना को मजबूत करती है और यह भावना राजभाषा कार्यान्वयन के लिए आवश्यक है।

गृह पत्रिका रचनात्मकता को प्रोत्साहित करने के साथ-साथ हिंदी भाषा और भारतीय संस्कृति के संरक्षण में भी योगदान देती है। इसमें प्रकाशित लेख भारतीय मूल्यों, परंपराओं और सामाजिक विषयों को उजागर करते हैं, जिससे भाषा के साथ-साथ सांस्कृतिक चेतना भी सशक्त होती है।

गृह पत्रिका राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन का एक प्रभावी, सहज और प्रेरक साधन है। यह न केवल हिंदी के प्रयोग को बढ़ाती है, बल्कि कर्मचारियों को राजभाषा नीति का सक्रिय सहभागी बनाती है। यदि गृह पत्रिका का नियमित प्रकाशन और प्रभावी संपादन किया जाए, तो यह राजभाषा हिंदी को व्यवहारिक और सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

वर्ष में दो **गृह पत्रिकाओं का नियमित प्रकाशन** करने से राजभाषा विभाग द्वारा आयोजित **पुरस्कार प्रतियोगिताओं में भाग लेने का अवसर** प्राप्त होता है। गृह पत्रिकाओं को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से राजभाषा विभाग द्वारा **पुरस्कार भी प्रदान किए जाते हैं।** राजभाषा गृह पत्रिकाओं की **गुणवत्ता एवं उच्च स्तर सुनिश्चित करने** हेतु राजभाषा विभाग द्वारा जारी **पत्र संख्या 11014/34/2014–राभा (प्र), दिनांक 21.01.2015** का अवलोकन किया जा सकता है।

संदीप कुमार पाण्डेय
महाप्रबंधक (लेखा/ राजभाषा)
आंचलिक कार्यालय (उत्तर) नोएडा

प्राचीन दृष्टिकोण के साथ प्रबंधन संबंधी सुझाव

"अमंत्रं अक्षरं नास्ति, नास्ति मूलं अनौषधं। अयोग्यः पुरुषः नास्ति, योजकस्तत्र दुर्लभः॥"

अर्थ है: कोई भी अक्षर मन्त्र-हीन नहीं, कोई भी जड़ (वनस्पति) औषधि-हीन नहीं, और कोई भी व्यक्ति पूर्णतः अयोग्य नहीं है। सब कुछ उपयोग में लाया जा सकता है, बस उसे सही से जोड़ने वाला या परखने वाला (योजक) दुर्लभ है, जो गुण पहचान सके।

दार्शनिक अर्थ: इसका अर्थ है कि प्रकृति में हर चीज़ का अपना उपयोग और महत्व है; कोई भी पौधा व्यर्थ नहीं है।

चिकित्सीय दृष्टिकोण: आयुर्वेद के अनुसार, यदि सही ज्ञान (योजक) हो, तो प्रत्येक पौधे की जड़ को दवा के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है।

नेतृत्व (Leadership) के संदर्भ में अर्थ:- नेतृत्व (Leadership) के संदर्भ में यह श्लोक एक समावेशी (Inclusive) और कुशल प्रबंधक के गुणों को दर्शाता है। इसका मुख्य संदेश यह है कि कोई भी संसाधन या व्यक्ति बेकार नहीं होता, बस उसे सही जगह नियुक्त करने वाले 'पारखी' की कमी होती है।

"अमंत्रं अक्षरं नास्ति" के सिद्धांत को आधुनिक कॉर्पोरेट जगत में निम्नलिखित पांच प्रमुख तरीकों से लागू किया जा सकता है:

1. समावेशी नेतृत्व (Inclusive Leadership)

जैसे हर अक्षर में मंत्र बनने की शक्ति है, वैसे ही हर कर्मचारी में कोई न कोई विशिष्ट कौशल होता है।
अनुप्रयोग: एक प्रबंधक को किसी को भी 'अयोग्य' (Incapable) नहीं मानना चाहिए। नेतृत्व का कार्य प्रत्येक व्यक्ति की छिपी हुई प्रतिभा (Hidden Talent) को पहचानना है।

2. सही भूमिका का चयन (Right Person for the Right Job)

श्लोक कहता है कि "योजकस्तत्र दुर्लभः" (जोड़ने वाला दुर्लभ है)। औषधि हर जड़ में है, लेकिन उसे पहचानने वाला दुर्लभ है।
अनुप्रयोग: यह Human Resource Management का मूल सिद्धांत है। यदि कोई कर्मचारी अच्छा प्रदर्शन नहीं कर रहा है, तो संभवतः वह गलत भूमिका में है। उसे उसकी क्षमता के अनुसार सही प्रोजेक्ट या विभाग में स्थानांतरित करना एक कुशल लीडर की जिम्मेदारी है।

3. विविधता और टीम बिल्डिंग (Diversity & Team Synergy)

मंत्र अलग-अलग अक्षरों के मेल से बनते हैं। इसी तरह, एक सफल टीम विविध पृष्ठभूमि और कौशलों वाले लोगों के संयोजन से बनती है।
अनुप्रयोग: टीम बिल्डिंग गतिविधियों के दौरान, लीडर को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि हर सदस्य की राय सुनी जाए और उसे सम्मान दिया जाए (Listening & Acknowledging)।

4. संसाधन का इष्टतम उपयोग (Resource Optimization)

"नास्ति मूलं अनौषधम्" सिखाता है कि कोई भी संसाधन व्यर्थ नहीं है।
अनुप्रयोग: आधुनिक प्रबंधन में इसे 'नवाचार प्रबंधन' (Innovation Management) कहा जाता है। उपलब्ध सीमित संसाधनों (Personnel, Technology, Budget) से अधिकतम मूल्य (Value) निकालने के लिए एक रचनात्मक दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है।

5. मनोवैज्ञानिक सुरक्षा (Psychological Safety)

जब एक लीडर यह विश्वास दिलाता है कि "कोई भी अयोग्य नहीं है", तो टीम में विश्वास और सुरक्षा का माहौल बनता है।
अनुप्रयोग: कर्मचारियों को गलतियाँ करने और सीखने का अवसर देना (Freedom to Fail) एक उच्च प्रदर्शन करने वाली टीम (High-Performance Team) के लिए आवश्यक है।

संतोष कुमार कनौजिया
सहायक महाप्रबंधक (लेखा)
आंचलिक कार्यालय (उत्तर), नोएडा

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) और भारतीय खाद्य निगम (FCI) का भविष्य

भारतीय खाद्य निगम (FCI) भारत की खाद्य सुरक्षा प्रणाली की रीढ़ है। यह संस्था देश के करोड़ों नागरिकों के लिए खाद्यान्न की खरीद, भंडारण और वितरण की जिम्मेदारी निभाती है। बढ़ती जनसंख्या, जलवायु परिवर्तन, भंडारण हानि और प्रणालीगत अक्षमताओं जैसी चुनौतियों के बीच अब पारंपरिक प्रणालियाँ पर्याप्त नहीं रह गई हैं। ऐसे में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence – AI) एक रणनीतिक परिवर्तनकारी शक्ति के रूप में उभर रही है।

AI को केवल स्वचालन का साधन नहीं, बल्कि मानव और तकनीक के सहयोग का माध्यम माना जाना चाहिए। यह मानव निर्णय को मजबूत बनाती है, न कि उसका स्थान लेती है। यदि इसे सही ढंग से अपनाया जाए तो कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) FCI को अधिक कुशल, पारदर्शी और उत्तरदायी बना सकती है।

खाद्यान्न प्रबंधन में AI की भूमिका

खाद्यान्न आपूर्ति श्रृंखला केवल खरीद तक सीमित नहीं है। इसमें उत्पादन पूर्वानुमान, गुणवत्ता परीक्षण, भंडारण, परिवहन, वितरण और शासन व्यवस्था सभी शामिल हैं। AI इन सभी स्तरों पर डेटा आधारित निर्णय लेने में मदद करती है, जिससे संपूर्ण प्रणाली अधिक प्रभावी बनती है।

उत्पादन, खरीद और गुणवत्ता मूल्यांकन में सुधार

AI से चलने वाले टूल जैसे मशीन लर्निंग मॉडल, रिमोट सेंसिंग और प्रेडिक्टिव एनालिटिक्स, फसल की पैदावार का अनुमान, इनपुट ऑप्टिमाइज़ेशन और क्लाइमेट रिस्क का अनुमान बेहतर बनाकर सटीक खेती में मदद करते हैं। ये टेक्नोलॉजी सरकारों और एजेंसियों को प्रोक्योरमेंट वॉल्यूम का ज़्यादा सटीक अनुमान लगाने में मदद करती हैं, जिससे बाज़ार स्थिर होते हैं और पर्याप्त बफ़र स्टॉक पक्का होता है। AI-बेस्ड सलाह किसानों को बुवाई, सिंचाई और पेस्ट मैनेजमेंट से जुड़े फ़ैसले लेने में भी मदद करती है, जिससे प्रोडक्टिविटी को सस्टेनेबिलिटी लक्ष्यों के साथ जोड़ा जाता है।

FCI किसानों से न्यूनतम समर्थन मूल्य (MSP) पर धान और गेहूं की खरीद करता है। परंपरागत गुणवत्ता परीक्षण मैनुअल होने के कारण समय लेने वाला और विवादास्पद हो सकता है। AI आधारित मशीनें जैसे कंप्यूटर विज़न और मशीन लर्निंग आधारित ग्रेन एनालाइज़र कुछ ही सेकंड में नमी, टूटे दाने और अशुद्धियों का सटीक आकलन कर सकते हैं। इससे निष्पक्षता बढ़ती है और किसानों का भरोसा मजबूत होता है।

भंडारण और गोदाम प्रबंधन

अनाज सप्लाई चेन में भारत में भंडारण हानि एक गंभीर समस्या रही है। AI-इनेबल्ड स्मार्ट वेयरहाउसिंग सिस्टम (SILO) जो तापमान, नमी, कीड़ों के संक्रमण और खराब होने के जोखिमों पर नज़र रखने के लिए IoT सेंसर, कंप्यूटर विज़न और प्रेडिक्टिव एनालिटिक्स का इस्तेमाल करते हैं। ऐसे सिस्टम शुरुआती चेतावनी दे सकते हैं, जिससे बचाव के उपाय किए जा सकते हैं और जिससे अनाज की गुणवत्ता बनी रहती है और नुकसान कम होता है। यह बड़े पब्लिक स्टोरेज सिस्टम (FCI/CWC/SWC)के लिए खास तौर पर ज़रूरी है, जहाँ मामूली एफिशिएंसी में भी काफ़ी बचत होती है।

परिवहन और लॉजिस्टिक्स का अनुकूलन

AI आधारित सिस्टम मांग का पूर्वानुमान, रूट ऑप्टिमाइज़ेशन, खाद्यान्न की ट्रैकिंग में अहम भूमिका निभाता है। मशीन लर्निंग एल्गोरिदम पुराने डेटा, मौसम के पैटर्न और खपत के ट्रेंड को एनालाइज़ करते हैं ताकि अलग-अलग इलाकों में अनाज की आवाजाही को बेहतर बनाया जा सके। इससे समय पर काम पूरा होता है, ईंधन की बचत होती है और कार्बन एमिशन कम होता है। AI-सपोर्टेड लॉजिस्टिक्स खरीद सेंटर, वेयरहाउस और डिस्ट्रीब्यूशन आउटलेट के बीच तालमेल को बेहतर बनाते हैं, जिससे COVID 19 जैसी महामारी या खराब मौसम की घटनाओं जैसी रुकावटों के दौरान मज़बूती मिलती है।

बिक्री(OMSS) और सार्वजनिक वितरण प्रणाली(PDS) में पारदर्शिता

सार्वजनिक वितरण प्रणाली में, AI ट्रेसेबिलिटी, पारदर्शिता और जवाबदेही को सुनिश्चित करता है। AI एनालिटिक्स के साथ इंटीग्रेटेड ब्लॉकचेन जैसी टेक्नोलॉजी खेत से अनाज की आवाजाही को ट्रैक करने में मदद करती हैं, और भ्रष्टाचार को कम करने में सहायक हो सकती है। डिमांड फोरकास्टिंग मॉडल एलोकेशन एफिशिएंसी को बेहतर बनाते हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि खाद्यान्न (अनाज) सही लाभार्थियों तक पहुंचे और साथ ही अनाज की गुणवत्ता बनी रहे और नुकसान कम हो।

सतत विकास में योगदान

AI आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरणीय – तीनों स्तरों पर सतत विकास को बढ़ावा देती है। अनाज की बर्बादी कम होती है, संसाधनों का बेहतर उपयोग होता है और किसानों और सरकार को बेहतर निर्णय लेने में मदद मिलती है।

मानव-केंद्रित दृष्टिकोण

AI का उपयोग मानव-केंद्रित होना चाहिए। इसका उद्देश्य कर्मचारियों और किसानों की क्षमता बढ़ाना होना चाहिए, न कि उन्हें प्रतिस्थापित करना। पारदर्शी और नैतिक AI प्रणाली ही दीर्घकालीन विश्वास कायम कर सकती है।

चुनौतियाँ और बाधाएँ

अपनी बहुत ज़्यादा क्षमता के बावजूद, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) को अपनाने में कई बड़ी चुनौतियाँ हैं। भरोसेमंद डेटा क्वालिटी और इंटरऑपरेबिलिटी (अलग-अलग तकनीक या सिस्टम का मिलजुलकर काम ना करना।) बड़ी चिंताएँ बनी हुई हैं, खासकर विकासशील अर्थव्यवस्थाओं में जहाँ डेटा सिस्टम अक्सर बिखरे हुए होते हैं। ज़्यादा शुरुआती निवेश और डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर में कमियाँ भी बड़े पैमाने पर इसे लागू करने में रुकावट डालती हैं। डिजिटल डिवाइड और स्किल्ड मैनपावर की कमी AI टेक्नोलॉजी के असरदार इस्तेमाल को और कम करती है। इसके अलावा, गवर्नेंस, प्राइवेसी, नैतिक चिंताएँ और साफ़ पॉलिसी फ्रेमवर्क की कमी स्ट्रक्चर्ड AI को अपनाना और मुश्किल बनाती है।

निष्कर्ष

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस में फूड कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया के ऑपरेशनल और स्ट्रेटेजिक भविष्य को फिर से तय करने की क्षमता है। अनाज की क्वालिटी का आकलन बेहतर करने और स्टोरेज के नुकसान को कम करने से लेकर लॉजिस्टिक्स को बेहतर बनाने और डिस्ट्रीब्यूशन में ट्रांसपेरेंसी को मजबूत करने तक, AI ऐसे टूल्स देता है जो FCI को एक ज़्यादा लचीला, जवाबदेह और मज़बूत संस्था में बदल सकते हैं।

हालांकि, सिर्फ़ टेक्नोलॉजी ही काफी नहीं है। असली बदलाव AI को इंसानी फैसले, इंस्टीट्यूशनल भरोसे, नैतिक गवर्नेंस और सस्टेनेबिलिटी लक्ष्यों के साथ जोड़ने में है। अगर सोच-समझकर अपनाया जाए, तो AI भारत की लंबे समय की फूड सिक्योरिटी को सपोर्ट करने वाला एक मज़बूत पिलर बन सकता है और देश के पब्लिक फूड सिस्टम की रीढ़ के तौर पर FCI की भूमिका को मज़बूत कर सकता है।

रिमझिम
स.श्रे. प्र. (राजभाषा)
आंचलिक कार्यालय (उत्तर)
नोएडा

नजरिया

हमने ये सोचा है अक्सर कि
सारी तकलीफें हमें ही क्यों
कभी उनकी भी सोचकर देखो
जिनके पास न घर है,
न कपड़ा और न रोटी।
और यूं बदल जाता है आपका नजरिया

कभी ये सोचकर परेशां हुए कि काश
ये हो जाता तो क्या हो जाता और
वो हो जाता तो क्या हो जाता
कभी ये सोचकर भी खुश हो लेना कि
इससे बुरा भी तो हो सकता था! तब क्या होता।

हमने असफल हो जाने का दुख तो मनाया
पर कभी ये न सोचा कि किस्मत से ज्यादा
और वक्त से पहले
कुछ भी तो नहीं मिलता।

असफलता ने ही तो सिखाए सफलता के गुर
और दिखाई है इक नई राह।

रंजना पाठक
पत्नी: श्री अमित कुमार पाठक
महाप्रबंधक (वित्त व लेखा)
आंचलिक कार्यालय (उत्तर)
नोएडा

बेटियां वरदान हैं..

बेटियां वरदान हैं, माँ-बाप की शान हैं।
कहीं लक्ष्मी, कहीं सीता, कहीं दुर्गा सी महान हैं।
बेटियां वरदान हैं।
कभी धूप सी उजली, कभी शीतल सी छांव है,
कभी निर्मल सी धार तो कभी बरछी, भाल, कृपाण हैं।
बेटियां वरदान हैं।
कभी घर संभालती, कभी बाहर संभालती
कभी दुनिया-जहान संभालती,
नहीं कोई इनसे अनजान है।
बेटियां वरदान हैं।
जन्म लेकर करती कृत-कृत घर को
कभी इठलाती, कभी बलखाती, पूरे घर में धूम मचाती,
आंखों का नूर बन जाती, बेटियां स्वाभिमान हैं।
हां, बेटियां वरदान हैं।
कभी सागर सी गहरी, कभी पहाड़ सी ऊंची,
ये परिवार की आन हैं।
बेटियां वरदान हैं।
कभी पी.टी. उषा, कभी कल्पना चावला,
कभी लक्ष्मी बाई सी महान हैं।
ये खुशियों का जहान हैं,
हां बेटियां वरदान हैं।

दीपक पाण्डेय
प्रबंधक (राजभाषा)
मुख्यालय / क्षेत्रीय कार्यालय – जयपुर

आइए बनाएं एक खुशहाल जहां

हे मानव तुमने कितने अत्याचार किए,
हे मानव धरती से तुमने कितने खिलवाड़ किए ।
तुमने उजाड़े सदियों पुराने हरियाले और घने वन,
तुमने ही तो खड़े किए हैं, अनेक कंक्रीट के वन ।

कंक्रीट के वन, जहाँ अपनापन नहीं है,
जहां खेत, बगीचे और खलिहान नहीं हैं।
न ही बची हैं, अब मानवीय संवेदनाएं,
ना ही बची हैं, अब जीवन रक्षक हवाएं,
और ना ही बचा अब जल निर्मल ।

अब तो हवाओं में भी घुल गया है जहर,
पीएम2.5, पीएम10, कार्बन, और कितने ही धूल के बारीक कण।
सभी बना रहे हैं हमारे फेफड़ों और हृदय को नित दुर्बल।
अब तो जल में भी घुली हैं अशुद्धियां,
मिला हुआ है अमोनिया तत्व, सीवेज का दूषित जल,
जो कर रहा है हम सबके जीवन को नित दुर्बल ।

धरा को रौंदकर क्या पाया तुमने, केवल कंक्रीट के वन,
तुमने ही तो उजाड़े कितने ही जीव जंतुओं के जीवन ।

तुम्हारे ही कारण कितने जीव जंतुओं का उजड़ा घरोंदा,
तुम्हारे ही कारण कितने परिंदों ने गंवाया अपना घोंसला।
क्या क्या गिनाएं तुम्हारे वह अपराध,
जो तुमने किए विकास के नाम पर।

देखो, अब कैसे टूट रहा है प्रकृति का क्रूर कहर,
अदृश्य प्रदूषण से दहल रहे हैं गांव-गांव और शहर-शहर ।
अब भी समय है, हे मानव प्रकृति और जीवों का सम्मान कर,
न उजाड़ जीवों के घरोंदे और उनके घोंसले ।
जगा अपने हृदय में दया, प्रेम और करुणा,

आइए हम सब लें शपथ, कि हम विकास के साथ साथ करेगें,
अपनी प्रकृति और जीवों का सम्मान ,
और अपनाएगें बसुधैव कुटंबकम की सदियों पुरानी परंपरा।
तभी तो मेरा देश होगा ऐसा जहां, सब रहेगें खुशहाल और निरोगी,

आइए हम सब बनाएं ऐसा एक खुशहाल जहां ;
आइए हम सब बनाएं ऐसा एक खुशहाल जहां ।

रंजना पाठक
पत्नी: श्री अमित कुमार पाठक
महाप्रबंधक (वित्त व लेखा)
आंचलिक कार्यालय (उत्तर) नोएडा

शून्यः एक जीवन दर्शन

जीवन जो शून्य से प्रारंभ होकर शून्य पर समाप्त होता है। मनुष्य इसी जीवनचक्र में जीवन पर्यन्त उतार-चढाव की लहरों में गोता खाते हुए कब शून्य तक पहुंच जाता है, इसका आभास भी उसे किंचित मात्र नहीं होता। जन्म से पहले न उसका कोई नाम होता है और न ही पहचान। वह जन्म लेता है और पूर्णता की ओर बढ़ता है, उसे जन्म पश्चात् नाम, पहचान और रिश्ते-नाते मिलते हैं और इन्हीं मोह-माया में उलझकर वह सांसों की लडियां पिरोते जाता है।

कभी आगे बढ़ने की आशा, कभी उन्मुक्त गगन में उड़ने की आकांक्षा तो कभी निरंतर मंजिल तक पहुंचाने की होड़। वास्तविकता में मंजिल क्या है – पूर्णता। अर्थात् वह जीवन-चक्र से होते हुए जब पूर्णता (अंतिम पड़ाव) पर पहुंचता है तब उसे शून्यता के दर्शन होते हैं और वह सब कुछ पीछे छोड़ प्रकृति में विलिन हो जाता है। शून्यता में कोई भेद नहीं परंतु गतिशीलता में धर्म, कर्म और मर्म का भेद है।

हमें काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार जैसे आंतरिक शत्रु से भ्रमित होकर अपना जीवन दोषपूर्ण नहीं करना चाहिए जो आध्यात्मिक विकास में बाधा उत्पन्न करते हैं। हमारा उद्देश्य होना चाहिए कि हम अपना जीवन कीर्तिपूर्ण परिभाषित करें, क्योंकि विलय के पश्चात वही शेष रह जाती है....

शून्य शुरुआत है, शून्य ही अंत है
शून्य अर्ध, शून्य ही पूर्ण है
शून्य इक नई सुबह, शून्य ही सांझ है
शून्य में समाहित सृष्टि सारी,
शून्य ही से न परे ये ब्रह्मांड है।

निधि शालवार नागेन्द्र
सहायक महा प्रबंधक (सामान्य)
आंचलिक कार्यालय (उत्तर) नोएडा

क्यों का सफ़र

स्याह रातों के पहरों में, नींद से कोसों दूर बेचैन आँखें
मन की उलझी परते तलाश रही हैं
कुछ अनसुलझे "क्यों"।

जितना बाहर काला घना अंधेरा,
उतना ही गहरा भीतर का सन्नाटा
और उस ख़ामोशी में खुद से रूबरू होते कुछ सवाल,
कुछ अनुत्तरित "क्यों"

उलझी हुई करवटे ढूँढती हैं कुछ नए आयाम,
हर करवट एक नयी कशमकश, कुछ नए सवाल

बिन बुलाए मेहमानों-से दस्तक देते विचार।
कुछ भूली बिसरी यादें, कुछ अनचाहे ख्याल

मन के दर्पण को झाँकती "मैं"
खोजती हूँ कुछ "क्यों" के जवाब
रह गए जो उत्तरविहीन, समाधान-रहित।
जो अक्स दिखता है, "क्या" मैं वही हूँ?
या कोई मुसाफिर अनजाना,
या कोई मुखोटे के पीछे छुपा हुआ
झूठी मुस्कान ओढ़े अजनबी बेगाना

कहने को तो सब कुछ है, फिर "क्यों" है ये तलाश
सब कुछ मिल कर भी,
जो मिल न पाए "क्यों" है उसकी झूठी आस
जो छुट गया जिसे खोजा जहाँ सारा,
"क्या" था हमेशा से मेरे आस पास
रास्ता तो तय कर लिया पर फिर भी,
"क्यों" है मुकम्मल मंज़िल की तलाश

कुछ खोए से अधूरे सपने,
कुछ टूटी ठहरी हुई सी उम्मीदें,
कुछ अलसाए ख्वाब, कुछ अनकहे दफ़न शब्द
हर रात हर लम्हा कुछ धुंध कुछ नया द्वंद्व।

सवाल है बहुतेरे पर कोई जवाब "क्यों "नहीं मिल पाता है
सवालो में उलझी ज़िन्दगी को
"क्यों "कोई मक़ाम नहीं मिल पाता है
इस द्वन्द को "क्यों" कोई ठहराव नहीं मिल पाता है
मन के किसी कोने में ये उलझन अब ही कैद है
कल फिर एक नया सवेरा एक नया सफ़र शेष है

कभी न कभी तो ये उलझनें सुलझ ही जाएगी,
इन सवालों को कोई तो दिशा मिल ही जाएगी
और अगर न भी मिले जवाब,
तो भी खुद से तो मुलाक़ात करवा ही जाएगी
अंतस को टटोल मन की उलझी गिरह खोल ही जाएँगी
मुझे उन परतों के बीच टटोल कर,
कुछ तो नया अनुभव सिखा ही जाएँगी

सवेरा फिर आएगा, नए दिन की शुरुवात होगी
प्रश्नों की पालकी को विदा कर, जवाबों की खोज होगी
मन की गहराइयों में उतर कर, खुद से भेंट होगी
और इस द्वन्द के पार किसी नयी रोशनी की शुरुवात होगी

आशीष अभिषेक गौतम
प्रबंधक (परिचालन)
आंचलिक कार्यालय (उत्तर) नोएडा

भरोसा पाता हूं मैं

नीर नित बहे चले, सूर्यदेव के दर्शनलाभ से
पृथ्वीलोक निर्मल हुए,
और पंछियों की चहचहाहट से, जीवन पुनर्भरण हुए।
सरसरी निगाहों से फसल की झलक लिए
संतोष सा पाता हूं मैं।
क्योंकि खाद्य निगम से फसल का सही मूल्य पाता हूं मैं।
हो ओस से शीतल हुई धरती,
या ग्रीष्मकाल में झुलसी उपजी।
अब न साहूकार का डर दिल लगाता हूं मैं,
अपनी उपजाई का धन अब उन्नत उपयोग लाता हूं मैं,
धरातल पे सजग खाद्य सैनिकों पर भरोसा पाता हूं मैं।
पृथक हुए सब डर बिटिया के शिक्षा के,
आयुष्मान से जीवन वर्धन का सुख पाता हूं मैं।
न कोई बीच न बिचोलिया मेरी जतन के प्रतिफल में,
आज खुद को ही ब्रह्मा और स्वयं सशक्त पाता हूं मैं।
धरातल पे सजग खाद्य सैनिकों पर भरोसा पाता हूं मैं।
हो गई कटाई चला मै संग किसान भाईयों के,
दिल में है आशा नयी और मन में सपने अनेक।
मानता हूं सफर में सुधार के पथ अभी और है,
पर फिर यथाकालीन परिस्थिति संदर्भित कर,
खुद की उन्नयित परिस्थिति सोच मंद-मंद मुस्काता हूं मैं।
और धरती की उपज लिए
खाद्य सैनिकों के पास चला जाता हूं मैं।

मध्यांतर की उड़ान

अभी दिन ढला नहीं शाम अभी बाकी है,
अभी न रुकना न झुकना साथी, है पथ पे चलते रहना,
क्यूंकि अभी तेरी उम्मीदों की उड़ान बाकी है।
की शोर से डरते नहीं वो जो कश्तियों में चलते हो,
है हौसला बुलंद उन्हीं का जो मुश्किलों में पलते हो।
हारने का डर उन्हें हो जो समर में कभी उतरे नहीं,
कि मरके जी उठने वालों को क्या डराएगी नियति।
रग रग में संघर्ष का लोहा जिसका सारथि है,
कि मत मान हुई रात यह तो मध्यकाल है,
शिखर का आरोहन अभी बाकी है।
जीवन है एक सफर न मान तू राहगुजारों की गुजर बसर,
की ठहराव है अंत, ठहरने पे उजड़ गए कई नगर-शहर।
बढ़ा चल, कि मध्यकाल से ही श्रीराम एवं
श्रीकृष्ठ की ओजस बढ़ी,
कि मध्यकाल से ही महावीर कैवल्य हुए,
और मध्यकाल में बुद्धम् गच्छामि।
मध्यकाल से कर तु शुरुआत एक नई,
भूल जा उन गलतियों को राह में जो बेडियां बनीं।
उठ नया सूरज प्रतीक्षा में तेरी नव संघर्ष के,
हार-जीत न है अंत इनसे ले तू सबक अनेक।
लड़ा चल तू बढ़ा चल तू भले मुश्किलें अनेकाकी हैं,
हमारी उम्मीदों की उड़ान अभी भी बाकी है।

प्रदीप मिश्रा
प्रबंधक (परिचालन)
आंचलिक कार्यालय, नोएडा

खुशियाँ, डर, खुशियों के डाकू एवं खुशियों के पराजीवी

1. भूमिका

गब्बर: अरे ओ सांभा, कितने आदमी थे रे?....

.....एक समय था जब गांवों में डाकुओं का भय व्याप्त हुआ करता था। बन्दूक लिए, नकाबपोश, घोड़े पर सवार डाकू गाँव में घुसकर डाका डालते थे, लूटपाट मचाते, शोषण करते एवं विरोध करने वालों को प्रताड़ित किया करते थे। समय के साथ कई परिवर्तन हुए एवं शिक्षा, कानून एवं प्रशाशनिक व्यवस्था में सुधार के साथ डाकू ख़त्म हो गए। .....**पर क्या वास्तव में डाकू ख़त्म हो गए हैं ? ? ?**

2. खुशियाँ तो खुशियाँ होती है, किन्तु खुशियों से डर क्यों लगता है?

बचपन में जब छोटे बच्चों के साथ अठखेलियाँ करते थे, उनको गुदगुदाकर खूब हँसाते थे और खुद भी खुश होते थे तो बड़े बुजुर्ग और माताएं रोकती टोकती थी कि अगर बच्चा दिन में अधिक हँसेगा तो रात को अधिक रोएगा।

तब यह सीखा और समझ में आया कि अपनी हंसी खुशी को सीमित करना चाहिए क्योंकि ना मालूम क्या अनचाहा घटित हो जाए और हमारी खुशियों पर ग्रहण लग जाए। वक़्त के साथ यह विचार ना चाहते हुए भी मनुष्य की अचेत स्मृति में स्थापित हो जाता है एवं हमारी सोच एवं व्यवहार को निर्देशित करने लगता है। और मजे की बात यह कि हमें पता भी नहीं चलता कि खुशियों को सीमित करने का कारण क्या है।

3. कार्यस्थल पर डाकू

कार्यालय में जब दो चार समविचार वाले लोग भोजनावकाश में अथवा सर्दी की चटक धूप में चाय की सुरकी लेने हेतु साथ बैठ कर हँसते खिलखिलाते हैं तो इन्ही ख़ुशी के पलों में अचानक मन की कंदराओं के भीतर कहीं एक क्षणिक विचार कौंधकर चला जाता है कि कहीं किसी को (ईर्ष्या रखने वाले = खुशियों के डाकू को) नागवार तो नहीं गुजर रहा होगा। यहाँ भी हंसी खुशी को सीमित करना ही उत्तम प्रतीत होता है।

4. विश्लेषण

मनोविज्ञान का छात्र होने के कारण, मानव के व्यवहार, चिंतन और भावनाओं का गंभीर और गहरा विश्लेषण करने की आदत सी हो गई है जिसमें मनुष्य की सोच और समाज में उसके अन्य मनुष्यों से रिश्तों की पड़ताल होती है।

मन में सवाल उठता है कि जब सब कुछ अच्छा लगता है, तो पता नहीं खुशियों से डर क्यों लगता है?
खुशियों से डर लगता ही इसलिए है कि खुशियों पर कहीं कोई वक्रदृष्टि तो नहीं डाल रहा।

अतः किसी एक मनुष्य की खुशियाँ किसी दुसरे मनुष्य की परेशानी ना बन जाए, इससे अच्छा तो यही है कि अपनी खुशियों की सीमित अभिव्यक्ति की आदत डाल ली जाए क्योंकि ऐसा करना अधिक आसान है।

5. खुशियों पर डाका कैसे डाला जाता है? एवं पीड़ित व्यक्ति क्या करे?

सामाजिक, पारिवारिक, कार्यालयीन और निजी जीवन में कई स्तरों पर खुशियों में सेंध लगाई जाती है।

ऐसा मनुष्य की कुप्रवृत्तियों, ईर्ष्या, जलन, शक्की प्रवृत्ति, मनमुटाव के कारण होता है। संस्कारवान एवं आशावादी मनुष्यों की सहज प्रकृति और स्वतन्त्रता को क़ैद करने की कोशिश होती है। मनुष्य को विवश किया जाता है, उसकी आज़ादी को खरीदा और बंधक बनाया जाता है।

जब कोई किसी को अपनी सम्पत्ति अथवा अधीनस्थ सहकर्मियों को अपना गुलाम समझने लगे और शक-संदेह के गड्ढे खोदने लगे और उसमें अपने मन मुताबिक़ कुछ रिश्तों की परतें जबरजस्ती बिछाने लगे .... तब व्यक्ति अपनी सोच समझ और व्यवहार का निर्देशक स्वयं नहीं रह जाता।

ऐसी दशा में, समायोजन में होने वाली कठिनाई को स्वीकार करना यदि विवशता हो जाए और खुशियां समस्या बन जाएं तो जीवन में घुटन तो होगी ही.....किन्तु संभवतः यही दुर्निवार सत्य है।

6. खुशियों के डाकू एवं पराजीवी हैं कहाँ? .... एवं डाकुओं को कैसे पहचाने ?

कहाँ हैं? : हमारे समाज में, आसपास, पड़ोस में, कार्यालय में सभी जगह विद्यमान हैं ।

कैसे पहचाने? : इन नए समय के डाकुओं का चरित्र / स्वाभाव :-

हीन भावना से ग्रसित मनुष्य, ईर्ष्यालु, कुसंस्कारी, कुढने- चिढ़ने वाले, जीवन में उपलब्धियों की कमी, ध्यान लोलुप, कथनी और करनी में अंतर वाले, बिना अधिक मेहनत किए सफलता प्राप्त, विचित्र शारीरिक बनावट वाले, विचित्र पहनावा व बोलचाल, विचित्र शारीरिक भाषा, चाटुकार प्रवृति (अपने से वरिष्ठ के तलवे चाटने वाले एवं अधीनस्थ कर्मियों को परेशान करने वाले), समाज में अपने से कमजोर व्यक्तियों के प्रति तुच्छ दृष्टि रखने वाले, आवश्यक्ता से अधिक बोलने वाले, अपना बखान करने वाले, लोगों को आपस में लड़वाने वाले, गलत सलाह देने वाले, षडयंत्र करने वाले, जातिवाद क्षेत्रवाद की मानसिकता वाले, कार्यालयीन कार्य में पत्रावलियों में शून्य योगदान वाले (Zero value addition), सुपर सीनियर के कक्ष में अपने अधीनस्थ कर्मी को देखकर भौचक्के रहने वाले, अपना काम दूसरों पर थोपने वाले, दूसरों की मेहनत का श्रेय लेने वाले, विचित्र प्रकार की मुस्कराहट वाले, कार्यालय की कैंटीन में बैठकर अथवा कार्यालय से बाहर सामजिक कार्यक्रमों में उपस्थिति के दौरान विपरीत लिंग को टेढ़ी नज़र से रह रहकर घूरते रहने वाले आदि।

7. खुशियों के डाकुओं एवं खुशियों के पराजीवियों से अपनी सुरक्षा कैसे करें?

सतर्क रहें, अपनी निजी बातें कदापि साझा ना करें, अपनी विषम पारिवारिक परिस्थियों, समस्याओं विवशताओं एवं कमजोरियों को इनके सामने पता ना लगने दें, सिर्फ काम से काम रखें, अपने पासवर्ड सुरक्षित रखें, जिन व्हात्सप्प ग्रुप में इस प्रकार के डाकू / पराजीवी भी सदस्य हैं उन ग्रुप्स में ज्यादा एक्टिव ना रहे, समय से कार्यालय आयें, इनके सामने खुशमिजाज़ ना दिखें, खुशियों के इन पराजीवियों के समक्ष अपनी बौद्धिक सम्पन्नता एवं वित्तीय सूझबूझ आदि का प्रत्यक्षीकरण कदापि ना करें।

नरेन्द्र पाण्डेय
सहायक श्रेणी द्वितीय (राजभाषा)
आंचलिक कार्यालय (उत्तर), नोएडा

राजभाषा सेवी - निष्ठा और नियति

मेजों के ढेर में दबी एक पुकार हूँ,
मैं अपनी ही भाषा का लाचार पहरेदार हूँ।
अनुवाद के फेर में उम्र बीती जा रही,
पदोन्नति की राह बस, सपनों में ही आ रही।

न पदोन्नति की सीढ़ी, न भविष्य का ठिकाना,
बस फाइलों के शब्दों को, हिंदी में ढालते जाना।
तकनीकी पदों की यहाँ ऊँची है उड़ान,
पर 'राजभाषा' के हिस्से में बस ठहरा हुआ आसमान

से बैठा हूँ उसी एक मेज पर,
ठप्पा लगा है 'अवर' का मेरी देज पर।
सहकर्मी आगे बढ़ गए, बन गए वो साहब,
और मेरा संवर्ग आज भी है पदोन्नति से गायब।

सम्मान तो मिलता है बस पखवाड़े के दिनों में,
जब हिंदी सजती है दफ्तर के गुलदस्तों में।
भाषणों में तो हम 'हृदय की धड़कन' कहलाते,
पर हक़ की बात पर सब 'नियमों' का पर्दा गिराते।

क्या शब्द शिल्पी होना ही मेरी खता है?
या अपनी भाषा की सेवा ही मेरी सजा है?
न कुर्सी का मान मिला, न ओहदे का सम्मान,
बस कागजों पर ही रह गया 'राजभाषा' का गौरव गान।

कलम थकी नहीं है, पर मन अब हारता है,
एक उपेक्षित कार्मिक आज अपनी स्थिति को निहारता है।
प्रतीक्षा है उस दिन की, जब न्याय का सवेरा होगा,
सिर्फ भाषा नहीं, भाषा-सेवक का भी बसेरा होगा।

सूर्यकान्त त्रिपाठी
सहायक श्रेणी तृतीय
(राजभाषा)
मंडल कार्यालय, लखनऊ

किसको हाले दिल सुनाऊँ

किसको हाले दिल सुनाऊँ सब तो गम के मारे हैं
किसको अपना हमदम समझूँ, सबके सब बेचारे हैं।

मन ना माना बह गया, बांवरी हवा के संग...
जो होना था हो चुका है, सिर्फ यादों के सहारे हैं।
किसको हाले दिल सुनाऊँ सब तो गम के मारे हैं

जो कुछ भी आज मैं हूँ, सब तेरे ही करिश्में हैं.....
कल आसमाँ का सूरज था, आज गर्दिश में सितारे हैं।
किसको हाले दिल सुनाऊँ सब तो गम के मारे हैं

सिसकियाँ भरता हूँ जब याद तुम्हारी आती है
तन्हाइयों मे टीसते... ये सारे ज़ख्म तुम्हारे हैं।
किसको हाले दिल सुनाऊँ सब तो गम के मारे हैं

हाँ... यही होना था हमारे प्यार का मरतबा
रुखसारों पर आज भी बीते कल के गुबारे हैं।
किसको हाले दिल सुनाऊँ सब तो गम के मारे हैं

Sगर खुदा को देना ही था तो खुशजर्फ मौत देता...
सितम ये हुआ कि लबों पे आज भी मिलन के इशारे हैं।

गौरव झा
सहायक श्रेणी तृतीय
(तकनीकी)
मंडल कार्यालय, गोरखपुर

कैसा हो व्यक्तित्व हमारा

चातकी पूछे चातक से, कैसा हो व्यक्तित्व हमारा,
चातक मुस्कुराता हुआ बोला, नभ में उड़ते बादलों में देखा,
खुले आसमां के आंचल में, जब मन हो एकाग्र, करे उच्च विचार,
व्यक्तित्व हो उदार, परोपकार वाला।

चातकी फिर जिज्ञासा से, पूछे कैसे पाऊं ये मन,
जो है बड़ा चंचल, न रहता वश में,
करता बड़ी हलचल, साधू मैं कैसे,
बताओ मेरे प्रियतम।

सुनो प्रिये, ये अबूझ पहेली,
मन को बाँधने, हो जो चली,
मन बड़ा निष्ठुर, है वह निरंकुश,
शुद्ध आचार-विचार से, लगता अंकुश,
करो जो तुम, ये साधना निराली,
मन होगा वश में, करोगी उन्नति।

चातकी सब समझ कर बोली ,
सीख मैं याद रखूंगी तुम्हारी,
अच्छे व्यवहार और आचरण से
उदार मन और परोपकार से ,
बन पाऊँगी मैं, तुम जैसा,
प्रेमी चातक, मेरे प्रियवर,
कौन यहाँ है, तुम जैसा।

पूजा कुमारी
सहायक श्रेणी द्वितीय (आगार)
मंडल कार्यालय, गोरखपुर

एफसीआई का डिजिटल दर्पण

हिंदी है हमारी शान, राष्ट्र की पहचान, संवाद का मान।
इसी भाषा में जुड़े दिलों के तार,
अंकीय भारत का हो उत्थान अपार।
भारतीय खाद्य निगम का अंकीय परिवार,
बढ़ा रहा है सेवा और पारदर्शी व्यवहार।

डिपो ऑनलाइन कहे – काम हो सरल,
रसीद और निर्गम अब सब सफल।
कागज़ घटे, गति बढ़े अपार,
स्वचालन से हो व्यापार।

डिपो दर्पण गाता प्यारा,
हर गोदाम का दे इशारा।
बोले हर गोदाम का मैं हूँ आईना,
सारा हाल दिखाता तान के सीना।
निरीक्षण, रिपोर्ट, सब पारदर्शी,
विश्वास जगाऊँ, सेवा निरंतर सी।

ई-ऑफिस लहराए – पत्रावलियों के संग,
ई हस्ताक्षर से घटे हर जंग।
कागज़ बचाए, समय सँवारे,
आधुनिक दफ़्तर सबको प्यारे।

एच.आर.एम.एस. कहे – मैं कर्मचारी का मित्र,
उपस्थिति, अवकाश, वेतन पत्रक का चित्र।
आंकड़े और सेवा सब एक स्थान,
मानव संसाधन का बने प्रमाण।

एफ.ए.पी. पेरोल – तनख्वाह का साथी,
कटौती, भत्ता, सब बात कहता सच्ची।
सी.पी.एफ, एन.पी.एस बोले बुढ़ापा हमारा,
भविष्य सुरक्षित, हम दे सबको सहारा।

जेम पोर्टल – खरीद का द्वार,
ऑनलाइन सौदे, पारदर्शी व्यापार।
एफ.सी.आई.गॉव.इन – सूचना का घर,
नोटिस, भर्ती, सब यहीं पर।

बी.टी.एस बोले मैं बजट का मान,
वित्त प्रबंधन मेरा अभियान।
ए.पी.ए.आर. उड़ता गाता मूल्यांकन के गीत,
कर्मठ कर्मचारी का बढ़ाए प्रीत।

आई.आर.आर.एस. देता रोज़ का लेखा जोखा,
भंडार का आँकड़ा, हर रोज़ है देखा।
विंग्स, डी.सी.एम.एस, डि.एस.एफ.एम.
बोले हम हो जिनके साथ,
आंकड़ो की धारा, उन सबके हाथ।

ई-खरीददारी से खरीद सरल हो जाए,
ई- निविदाएँ करे और समय बचाए।
एन.आई.सी. मेल – संवाद का जरिया,
आधिकारिक पत्राचार का दरिया।

एफ.सी.आई. जी.आर.एस. देवे शिकायत का समाधान,
जन सेवा में बढ़ाए अपना मान।
एफ.सी.एस. – खाद्य ऋण की पहचान,
वित्तीय लेन-देन का रखता है ध्यान।

वी.एल.टी.एस. – गाड़ी का रखवाला,
हर सफर का सटीक हवाला।
डब्ल्यू.एम.एस. – गोदाम का प्रहरी,
भंडारण में हो सुरक्षा जारी

वी.सी.आई.एम.एस. दे सतर्कता का संदेश,
न्याय, ईमानदारी का विशेष प्रवेश।
न्याय दिलाए सी.वी.सी. का मार्ग दिखाए,
सतर्कता के गीत सुनाए, ईमानदारी को सर पर उठाए।

सभी पोर्टल मिलकर गाएँ,
भारतीय खाद्य निगम का गौरव बढ़ाएँ।
डिजिटल भा०खा०नि० का हो निर्माण,
जय हिंदी, जय भारत महान।

वर्षा सक्सेना
सहायक श्रेणी तृतीय (आगार)
मण्डल कार्यालय, लखनऊ

कैसी आज़ादी?

आज़ादी दी थी भारत माँ को, जंजीरों से छुड़ाया था
कैद किया जिस दुश्मन ने उसको माटी-सा उड़ाया था
वो अलबेले, वो पागल सब, भारत माता के दीवाने थे
तन-मन-धन सब अर्पण किया, दुश्मन रोक न पाया था।
आज़ादी दी थी भारत माँ को, जंजीरों से छुड़ाया था।

एकता की बातें करते हैं, धर्म-जाति में हम बँटे हुए,
कुरीतियों में हम जकड़े हुए और मानवता से हटे हुए
कहना आसान है कुर्बानी दी हमारे यहाँ के वीरों ने
पर क्या हम खुद को वार दिए, हैं नहीं जुर्म से सटे हुए?
संचार नहीं था पर कमल रोटी को हथियार बनाया था
आज़ादी दी थी भारत माँ को, जंजीरों से छुड़ाया था।

बँटे हुए हम समुदायों में, फैला रहे नफ़रत का साया,
पर क्या एकता के बिना दुश्मन का, तिनका भी होता ज़ाया?
गांधी जी और राजगुरु का, जितना अधिकार है भारत पर,
उतना क्या अशफ़ाक़ और मौलाना आज़ाद को मिल पाया?
सलमा ने बुनी राधा की चुनरी,
प्रेमचंद ने ईदगाह पाठ पढ़ाया था
आज़ादी दी थी भारत माँ को, जंजीरों से छुड़ाया था।

हम माँ का आँचल बेचकर, सोचते हैं घर को भर रहे
हमने बेचा है खुद को ही, सोचो हम क्या हैं कर रहे।
भ्रष्टाचार और चोरी की लम्बी एक कहानी है
दुःख देकर अपनों को ही, किसका दुःख हम हर रहे?
जब देने थे अपने गहने, माताओं ने क़र्ज़ चुकाया था
आज़ादी दी थी भारत माँ को, जंजीरों से छुड़ाया था।

इस धरती पर सरोजिनी, पन्ना और हुईं लक्ष्मी रानी थीं,
दिया लहू भारत माँ को, कुर्बान करी जवानी थी
ऐसी धरती को चूम लूँ मैं, यहाँ देशप्रेम है रमा हुआ,
ये धरती सचमुच जानो, वीरों की बलिदानी थी
गुलाब कौर ने पहनकर चूड़ी, तिरंगे को हाथों में उठाया था
आज़ादी दी थी भारत माँ को, जंजीरों से छुड़ाया था।

क्या ये देश वही है जिसको मंगल पाण्डेय से वीर मिले?
क्या यही वो धरती है, जिसे बुद्ध महावीर से धीर मिले?
भगत सिंह ने बम फोड़ा और ललकारा था दुश्मन को
क्या ये देश वही है जहाँ पर मीरा, रहीम, कबीर हुए?
जेलों में बंद होकर भी, सोते भारत को जगाया था
आज़ादी दी थी भारत माँ को, जंजीरों से छुड़ाया था।

देश में जिसने जन्म लिया वो व्यक्ति यहीं का वासी है
ये धरती अपनी माँ है और एक ही कश्मीर-काशी हैं
हम शरण में आने वालों का आदर करते हैं नफ़रत नहीं
यहाँ पड़ोस के रहने वाले सब, बच्चों के काका मासी हैं
सबको ऐसे एकत्रित देख, दुश्मन ने शीश झुकाया था
आज़ादी दी थी भारत माँ को, जंजीरों से छुड़ाया था।

पायल अग्रवाल
सहायक श्रेणी तृतीय (राजभाषा)
मंडल कार्यालय, गोरखपुर

शीर्षक: कार्यालय की दीवारों के भीतर —एक जीवंत संसार

कार्यालय केवल ईंट, सीमेंट और कंप्यूटरों का समूह नहीं होता; यह विचारों, संबंधों और सपनों का एक जीवंत संसार होता है। हर सुबह जब हम अपनी पहचान-पत्र पहनकर प्रवेश द्वार से भीतर आते हैं, तो मानो हम एक ऐसे मंच पर कदम रखते हैं जहाँ जिम्मेदारियाँ संवाद करती हैं, समय अनुशासन सिखाता है और सहयोग सफलता का मार्ग प्रशस्त करता है।

कार्यालय का दिन एक लय में चलता है। चाय की पहली चुस्की के साथ विचारों की पहली हलचल शुरू होती है। किसी की मेज पर योजनाओं का खाका बनता है, तो कहीं आँकड़ों के बीच भविष्य की दिशा तलाश की जाती है। ईमेल, बैठकें और समय-सीमाएँ—ये सब मिलकर उस अनुशासन को गढ़ते हैं जो किसी भी संगठन की रीढ़ होती है। परंतु इन सबके बीच जो सबसे मूल्यवान है, वह है मानवीय संवेदना—एक-दूसरे की बात सुनना, समझना और मिलकर आगे बढ़ना।

कार्यालय हमें टीमवर्क का वास्तविक अर्थ सिखाता है। यहाँ सफलता किसी एक व्यक्ति की नहीं होती; यह सामूहिक प्रयास का परिणाम होती है। जब किसी परियोजना की समय-सीमा नज़दीक होती है, तब देर तक जलती लाइटें केवल काम का संकेत नहीं देतीं, बल्कि समर्पण और विश्वास की कहानी कहती हैं। कोई सहकर्मी जब थकान में भी मुस्कुराकर सहायता के लिए आगे बढ़ता है, तो वह क्षण हमें याद दिलाता है कि कार्यस्थल रिश्तों से भी बनता है।

परिवर्तन कार्यालय जीवन का स्थायी सत्य है। नई तकनीकें, नए विचार और नई चुनौतियाँ—ये सब हमें निरंतर सीखने के लिए प्रेरित करते हैं। जो संगठन सीखने की संस्कृति को अपनाते हैं, वे समय के साथ न केवल टिकते हैं, बल्कि नेतृत्व भी करते हैं। यहाँ गलती को अपराध नहीं, बल्कि सीख का अवसर माना जाता है। यही दृष्टिकोण नवाचार को जन्म देता है और कर्मचारियों में आत्मविश्वास का संचार करता है।

कार्यालय पत्रिका इस पूरे संसार की आवाज़ होती है। यह केवल उपलब्धियों का दस्तावेज़ नहीं, बल्कि अनुभवों, प्रयासों और प्रेरणाओं का दर्पण होती है। इसमें किसी कर्मचारी की छोटी-सी पहल भी स्थान पाती है और किसी टीम की बड़ी सफलता भी। लेख, कविताएँ, विचार और चित्र—सब मिलकर संगठन की सामूहिक चेतना को शब्द देते हैं। यह हमें जोड़ती है, पहचान देती है और गर्व का अनुभव कराती है।

कार्य-जीवन संतुलन आज के समय की एक महत्वपूर्ण आवश्यकता है। कार्यालय जब कर्मचारियों के स्वास्थ्य, परिवार और व्यक्तिगत विकास को महत्व देता है, तब कार्य केवल दायित्व नहीं, आनंद बन जाता है। लचीले समय, संवाद की खुली संस्कृति और सराहना के छोटे-छोटे शब्द—ये सब मिलकर सकारात्मक वातावरण रचते हैं। ऐसे वातावरण में काम करने वाला व्यक्ति न केवल बेहतर प्रदर्शन करता है, बल्कि संगठन का सच्चा प्रतिनिधि भी बनता है।

अंततः, कार्यालय एक यात्रा है—सीखने की, बढ़ने की और साथ चलने की। यहाँ हर दिन हमें बेहतर बनने का अवसर मिलता है। यदि हम अपने कार्य को उद्देश्य से जोड़ लें, सहकर्मियों को सम्मान दें और परिवर्तन को अपनाएँ, तो कार्यालय की दीवारों के भीतर रचा यह संसार न केवल उत्पादक होगा, बल्कि प्रेरणादायी भी बनेगा। यही भावना हमारी कार्यालय पत्रिका के माध्यम से शब्दों में ढलकर सभी तक पहुँचे—और हमें एक साझा लक्ष्य की ओर अग्रसर करे।

शरद भारद्वाज
प्रबंधक (परिचालन)
मंडल कार्यालय, पटियाला

विकल्प

कुछ कर जाने की ललक भी है, और ना कर पाने की खीज सी भी,
इन दोनों के बीच का नाजुक पर्दा ही, कसौटी इंसान की परखता है।

चाहूँ तो बनूँ अब्दुल कलाम मैं, चाहूँ तो हाफिज़ सईद सा भी,
टुकड़े-टुकड़े के बुलंद नारे करूँ, या गूंजता रहूँ अजान सा भी,
झूठे सपने हूरों के देखूं, या खुद चमकता रहूँ चाँद सा भी,
अंतर इनके बीच का ही, बनके इस्लाम झलकता है।

चीखे करूँ बुलंद मीनार से मैं, या चुप्पी से यलगार सा भी,
देखूं कमियां इस दुनिया की, या करूँ स्वीकार अच्छाईयां भी,
समुद्र मंथन से निकला विष बनूँ, या अमृत पाने के सोपान सा भी,
विकल्प मध्य का इनके ही, बनके शिव निखरता है।

जुझारूपन कुछ कर गुजरने का, और हार जाने पर संयम सा भी,
मेहनत से ऊँचाइयों को छूता, या तकता मदद की राह सा भी,
घिसता रहूँ चाहे केंचुए सा, या उड़ता बनके बाज सा भी,
रूपांतर सागर से पर्वत का ही, बनके हिमालय निकलता है।

रामअशीष प्रसाद
सहायक श्रेणी- द्वितीय (राजभाषा)
मंडल कार्यालय, श्रीनगर

राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में संस्थाओं की भूमिका

जैसा कि हम सभी जानते हैं कि भारतीय भाषाओँ में राजभाषा हिंदी एक ऐसी भाषा निखर कर हमारे बीच आई जिसने आज पुरे विश्व पटल पर अपनी छाप छोड़ दी है। सन 1857 की स्वतंत्रता क्रांति के संघर्ष के दौरान और उसके पश्चात अनेक राष्ट्रीय नेताओं और देश-प्रेमियों ने राष्ट्रीय एकता और राष्ट्रीय संवाद की दृष्टि से हिंदी भाषा के लिए अनेक संस्थाएँ खड़ी की थीं, हिंदी सहित भारतीय भाषाओं के लिए संघर्ष किया था। जिसमें साहित्यिक संस्थाएं जैसे- नागरी प्रचारणी सभा, साहित्य अकादमी, हिंदी साहित्य सम्मेलन, सामाजिक और धार्मिक संस्थाएं, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, केन्द्रीय हिंदी समिति, भारत सरकार का विदेश मंत्रालय और गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, मिडिया इत्यादि सभी का योगदान सर्वोपरि है। जिसमें महात्मा गांधी, विनोबा भावे, स्वामी दयाननंद, आर्य समाज के अनेक नेताओं, स्वतंत्रता सेनानियों एवं धर्मगुरुओं, संघ या उसे विचारधारा से जुड़े अनेक महानुभावों व लाखों देशप्रेमियों ने इसमें अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया था। इन संस्थाओं का मूल उद्देश्य हिंदी भाषा के प्रयोग व प्रसार को बढ़ाना था ताकि हिंदी राष्ट्रीय संपर्क की भाषा बन सके। लेकिन आज इन ज्यादातर संस्थाओं की स्थिति क्या है?

आज उनके पास बड़े-बड़े भवन हैं, जमीनें हैं, उनसे प्राप्त भारी आमदनी है। अनेक संस्थाओं को सरकारी सहायता भी प्राप्त है। लेकिन अगर उनकी स्थिति और इनकी कार्य प्रणाली देखी जाए तो प्राय: न वह भावना है, न ही कोई ऐसा कार्य जिसे हिंदी का प्रयोग व प्रसार बढ़ सके।

देश-प्रेम की भावना से अनेक लोगों ने जो भूमि इन्हें दान दी थी, कई जगह, कुछ लोग उसकी लूट-खसोट में लगे हैं। कई संस्थाएँ राजनीति की तरह परिवार आधारित या वंशानुगत हो गई हैं। हिंदी के नाम पर कुछ औपचारिक कार्यक्रम कर लिए जाते हैं।

हिंदी का प्रयोग व प्रसार बढ़ने का कोई संघर्ष या प्रयास दूर-दूर तक दिखाई नहीं देता। सबकी निगाहें कमाई पर लगी हैं। यहाँ भी राजनीतिक से जुड़े लोगों का प्रभुत्व है। प्राय: कुछ गतिविधियां हैं भी तो समाज से उसका कोई सरोकार नहीं। यदा-कदा कुछ साहित्यकारों के नाम पर कहानी-कविता वगैरह हो जाती है। पिछली 75 वर्षों में पूरा देश अपनी भाषाओं से विमुख होकर अंग्रेजी की तरफ जाता रहा और ये बंद कमरों में कहानी, कविता करते रहे। उसके नाम पर कुछ पत्रिकाएं वगैरह निकालते रहे, अपने चहेतों को पुरस्कार - सम्मान बांटते रहे। धीरे-धीरे ये संस्थाएँ भाषायी संघर्ष से बहुत दूर चली गईं। कुछ अपवाद हो सकते हैं लेकिन ऐसी ज्यादातर संस्थाएँ जिनके पास अपार धन और संसाधन हैं, अब भाषायी संघर्ष से बहुत दूर हैं। जहाँ संसाधनयुक्त संस्थाएँ निष्क्रिय मठों का रूप ले चुकी हैं, वहीं कहीं-कहीं कुछ इक्का-दुक्का लोग जो भाषायी संघर्ष में लगे हैं, वे बिना साधन-सुविधा और समर्थन प्रयासरत तो हैं, लेकिन अभावों के कारण विवश हैं।

विभिन्न राज्यों में स्थापित हिंदी साहित्य अकादमियाँ, जो सरकार के पैसे से चलती हैं। अक्सर वे मानते हैं कि वे तो साहित्य के लिए हैं, भाषा के प्रचार-प्रसार से उनका क्या लेना-देना ? वहाँ भी प्राय: राजनीति की बैसाखी लिए साहित्य के कथित पुरोधा और विश्वविद्यालयों के शिक्षक आदि कहानी, कविता, आलोचना, समीक्षा आदि और पुरस्कारों की बंदरबांट करते रहते हैं। भाषायी संघर्ष और उसके प्रयासों से उसका कोई सरोकार नहीं। यदि रोजगार, व्यापार-व्यावहार शासन-प्रशासन व न्याय आदि में भाषा नहीं होगी तो कोई पढ़ेगा क्यों, यदि विद्यार्थी कोई भाषा पढ़ेंगे नहीं तो उस भाषा का साहित्य क्यों और कैसे पढ़ेंगे ? आज वही स्थिति है, लेकिन इन तमाम संस्थाओं को अभी भी यह नहीं दिख रहा कि 40 साल के नीचे के कितने लोग साहित्य से जुड़े हैं ? साहित्य को बचाना-बढ़ाना है तो भारतीय भाषाओं को सभी क्षेत्रों में प्रतिष्ठित करने से ही बात बनेगी। साहित्य का अर्थ केवल ललित साहित्य नहीं, ज्ञान-विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों के साहित्य पर भी किसीका ध्यान नहीं।

बड़ी संख्या में तो लोग तो देश के बजाए विदेशों में हिंदी बचाने और बढ़ाने के महाअभियान में लगे हैं। यह ठीक वैसी ही बात है कि जब जड़ें सूख रही हों और जो टहनियां कभी थोड़ी बहुत पड़ोसियों के घर पहुंच गयी थीं, उनके पत्तों पर पानी की कुछ बूँदें डालकर हम वृक्ष को मजबूत करने और उसका विस्तार करने का प्रयास करें। महाकवि कालीदास का स्मरण होने लगता है। शायद उनके लक्ष्य ही कुछ भिन्न हैं। एक समस्या यह भी है कि भाषा के क्षेत्र में विशेषकर हिंदी के मामले में कार्य से बहुत ज्यादा जोर केवल कार्यक्रमों पर है। किसी कार्यक्रम से भाषा के प्रसार को कितना या क्या लाभ मिला, इसका विचार भी कोई नहीं करता। ऐसे अनेक बिंदू हैं जिन पर विचार की आवश्यकता है। इसके लिए भी कितने लोग तैयार हैं?

मुझे लगता है कि संघ सरकार अथवा राज्य सरकारों द्वारा जो ऐसी ऐतिहासिक अथवा सरकारी सहायता / अनुदान प्राप्त संस्थाएँ, जिस किसीके भी नियंत्रण या कार्यक्षेत्र में हों, उन्हें इनकी दशा-दिशा पर ध्यान देते हुए इनकी संपत्ति की लूट रोकने, इन्हें हिंदी के प्रयोग व प्रसार बढ़ाने की दिशा में सक्रिय करने के लिए आवश्यक कदम उठाने चाहिए।

इसी प्रकार हिंदी साहित्य अकादमियों व अन्य भाषाओं की साहित्य अकादमियों को भाषा की अकादमी का रूप देते हुए भारतीय भाषाओं के प्रयोग व प्रसार को महत्वपूर्ण स्थान देते हुए सक्रिय किया जाना चाहिए। हिंदी अथवा अन्य भारतीय भाषाओं के प्रयोग व प्रसार को बढ़ाने में इन तमाम संस्थाओं के योगदान व उपलब्धियों की समीक्षा भी की जानी चाहिए।

भारतीय भाषा-प्रेमियों की अपेक्षा है कि भारतीय भाषाओं के प्रबल समर्थक मा. प्रधानमंत्रीजी, मा. गृहमंत्री जी, शिक्षा मंत्री जी व राज्यों के मुख्यमंत्रिगण तथा संबंधित मंत्रियों व वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारीगण इस पर ध्यान दें और आवश्यक कदम उठाएँ।

"एक हृदय हो भारत जननी"

अजय सिंह रोहिल्ला
प्रबंधक (राजभाषा)
क्षेत्रीय कार्यालय, दिल्ली

सतर्कता हमारी साझा ज़िम्मेदारी

क्यों रे प्यारे !
ढोल बजाओ
बजाओ नगाड़े
लगाओ ज़ोर-ज़ोर के नारे
फिर भी न समझे मेरे प्यारे !

क्यों रे प्यारे !
माना कि
प्रकृति ने बनाया
हम सबको न्यारा-न्यारा
फिर क्यों दिखता
हमारा भाईचारा न्यारा-न्यारा

क्यों रे प्यारे ! कब तक
आखिर कब तक
यूँ ही किसी दूसरे के सिर
दोष मढ़कर
हम रहेंगे दूर किनारे

क्यों रे प्यारे !
समझ ले समय से पहले
ले आ बुद्धि
अपनी किनारे
छोड़ दे जीना
भ्रष्टाचार के सहारे

क्यों रे प्यारे !
स्वयं तू है
एक आकार
खुद का है तू
खुद आधार
फिर क्यों भ्रष्टाचार तेरा आधार

क्यों रे प्यारे !
सतर्कता नहीं है
केवल एक दिन
यह है सब दिन
हर रोज़ सतर्क रह प्यारे !
कुतर्क को कर दूर किनारे
इस बात को समझ
मेरे प्यारे !

हरेन्द्र सिंह
सहायक श्रेणी-III (राजभाषा)
क्षेत्रीय कार्यालय, दिल्ली

खेलो का महत्व

मनुष्य के सर्वांगीण विकास में खेलों का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। खेल केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और नैतिक विकास का सशक्त माध्यम हैं। “स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का वास होता है” — यह कहावत खेलों के महत्व को भली-भांति स्पष्ट करती है।

खेल हमारे शरीर को स्वस्थ, सशक्त और सक्रिय बनाए रखते हैं। नियमित खेलकूद से शारीरिक क्षमता बढ़ती है, रोग-प्रतिरोधक शक्ति मजबूत होती है और जीवन में ऊर्जा का संचार होता है। आज के डिजिटल युग में, जहाँ बच्चे और युवा मोबाइल तथा कंप्यूटर तक सीमित होते जा रहे हैं, खेल उन्हें सक्रिय जीवनशैली अपनाने की प्रेरणा देते हैं।

मानसिक विकास में भी खेलों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। खेलों के माध्यम से एकाग्रता, आत्मविश्वास, धैर्य, निर्णय लेने की क्षमता और नेतृत्व गुण विकसित होते हैं। जीत-हार का सामना करना व्यक्ति को जीवन की वास्तविकताओं के लिए तैयार करता है। हार हमें सीखने और आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है, जबकि जीत आत्मविश्वास को नई ऊँचाइयाँ प्रदान करती है।

खेल सामाजिक समरसता और भाईचारे को भी बढ़ावा देते हैं। टीम खेलों से सहयोग, अनुशासन और सामूहिक उत्तरदायित्व की भावना विकसित होती है। विभिन्न क्षेत्रों, भाषाओं और संस्कृतियों के खिलाड़ी जब एक साथ खेलते हैं, तो राष्ट्रीय एकता और आपसी सौहार्द मजबूत होता है। खेल जाति, धर्म और वर्ग की सीमाओं को तोड़कर सबको एक समान मंच प्रदान करते हैं।

आज खेल करियर और राष्ट्र गौरव का भी महत्वपूर्ण साधन बन चुके हैं। भारत ने क्रिकेट, हॉकी, बैडमिंटन, कुश्ती, एथलेटिक्स जैसे अनेक खेलों में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाई है। खेलों में उत्कृष्ट प्रदर्शन से न केवल खिलाड़ी का भविष्य संवरता है, बल्कि देश का मान-सम्मान भी बढ़ता है।

अतः यह आवश्यक है कि शिक्षा के साथ-साथ खेलों को भी समान महत्व दिया जाए। विद्यालयों, महाविद्यालयों और समाज में खेलों के लिए उपयुक्त वातावरण और संसाधन उपलब्ध कराए जाएँ। खेल केवल शरीर को ही नहीं, बल्कि चरित्र को भी गढ़ते हैं।

मोनू मल्लिक
सहा.श्रेणी-III(राजभाषा)
मंडल कार्यालय, जालंधर

हिंदी: मेरी शिक्षा, मेरी चेतना और मेरा जीवन

कहते हैं कि भाषा मानव जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा होता है। वह केवल संवाद का माध्यम नहीं बल्कि मनुष्य की सोच उसकी संवेदना और उसके संस्कारों की आधारशिला होती है। भाषा के माध्यम से ही हम अपने अनुभवों को अर्थ देते हैं और समाज से अपना संबंध स्थापित करते हैं। मेरे जीवन में हिंदी ने यही भूमिका निभाई है—एक ऐसी भाषा के रूप में जिसने मुझे केवल बोलना या लिखना नहीं बल्कि सोचना और समझना सिखाया।

आज के समय में यह एक कटु यथार्थ है कि हिंदी माध्यम से पढ़ाई को प्रायः हेय दृष्टि से देखा जाता है। योग्यता को भाषा से जोड़कर देखने की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है। परंतु मैंने बचपन से ही हिंदी माध्यम से पढ़ना चुना। यह चयन किसी विवशता का परिणाम नहीं था बल्कि एक सहज विश्वास का था—विश्वास इस बात का कि जो भाषा मुझे मेरी जड़ों से जोड़े रखेगी वही मुझे जीवन की गहराइयों तक ले जा सकेगी।

मैं साहित्य का विद्यार्थी रहा हूँ। विद्यालय से लेकर स्नातक और स्नातकोत्तर तक मेरी पूरी शैक्षणिक यात्रा हिंदी माध्यम से हुई। इस यात्रा में हिंदी मेरे लिए केवल अध्ययन की भाषा नहीं रही, बल्कि वह धीरे-धीरे मेरी सोच और दृष्टि का आधार बनती चली गई। हिंदी साहित्य ने मुझे जीवन को देखने समझने और महसूस करने का ढंग सिखाया।

जब मैंने प्रेमचंद को पढ़ा तो साहित्य का वास्तविक उद्देश्य समझ में आया। उनकी रचनाओं में समाज की कठोर सच्चाइयाँ हैं—गरीबी, शोषण, अपमान और संघर्ष। प्रेमचंद ने मुझे यह सिखाया कि साहित्य का सबसे बड़ा धर्म मनुष्यता के पक्ष में खड़ा होना है। उनकी कहानियों ने मेरे भीतर संवेदना और सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना को गहराई दी।

निराला के साहित्य ने मुझे आत्मसम्मान और साहस का पाठ पढ़ाया। उनके शब्दों में विद्रोह है लेकिन वह विद्रोह मानवीय गरिमा से जुड़ा हुआ है। निराला ने यह सिखाया कि विपरीत परिस्थितियों में भी अपनी अस्मिता और स्वाभिमान को बचाए रखना ही सच्ची शक्ति है। उनके लेखन ने मुझे भीतर से दृढ़ बनाया।

नागार्जुन को पढ़ते हुए यह बोध हुआ कि साहित्य को जनता से अलग नहीं किया जा सकता। उनकी रचनाएँ खेतों, मजदूरों, राजनीति और आम जन के संघर्षों से जुड़ी हैं। उन्होंने मुझे सिखाया कि साहित्य तभी जीवंत रहता है जब वह जन-जीवन की धड़कनों से जुड़ा हो और समाज के यथार्थ से आँख न चुराए।

जयशंकर प्रसाद के साहित्य ने मेरी चेतना को सांस्कृतिक और दार्शनिक गहराई दी। उनके लेखन में इतिहास, दर्शन और आत्मचिंतन का अद्भुत समन्वय है। प्रसाद ने मुझे यह समझाया कि हिंदी साहित्य केवल वर्तमान की अभिव्यक्ति नहीं बल्कि हमारी सांस्कृतिक स्मृति और आत्मा का विस्तार भी है।

भारतेंदु हरिश्चंद्र ने मुझे भाषा के सामाजिक दायित्व से परिचित कराया। उन्होंने हिंदी को आधुनिक चेतना और सामाजिक सुधार का माध्यम बनाया। उनके साहित्य से यह स्पष्ट हुआ कि जब भाषा जागरूक होती है तभी समाज में परिवर्तन संभव होता है। उन्होंने यह बोध कराया कि भाषा केवल अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि उत्तरदायित्व भी है।

इन सभी साहित्यकारों की रचनाएँ मेरे भीतर धीरे-धीरे उतरती चली गईं और मेरे व्यक्तित्व को गढ़ती रहीं। हिंदी ने मुझे संवेदनशील बनाया, प्रश्न करने का साहस दिया और सत्य के पक्ष में खड़े होने की शक्ति प्रदान की। हिंदी माध्यम से पढ़ते हुए कई बार यह अनुभव हुआ कि भाषा के आधार पर व्यक्ति को कम आँका जाता है परंतु साहित्य ने मुझे यह विश्वास दिया कि विचारों की ऊँचाई भाषा से नहीं दृष्टि से तय होती है।

वर्तमान में जब मैं राजभाषा के क्षेत्र में कार्य कर रहा हूँ तो यह अनुभव और भी गहरा हो गया है। मुझे लगता है कि मैं केवल राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग पर अपना योगदान नही दे रहा हू बल्कि भाषा और साहित्य के प्रचार पर भी अपना अहम योगदान दे रहा हूँ। प्रशासनिक व्यवस्था में हिंदी का प्रयोग यह सिद्ध करता है कि हिंदी आज केवल साहित्य की भाषा नहीं बल्कि शासन और जन के बीच संवाद का सशक्त माध्यम भी है।हिंदी ने मुझे आजीविका दी यह सत्य है।लेकिन उससे भी बड़ा सत्य यह है कि हिंदी ने मुझे जीवन को समझने की दृष्टि दी।मेरे लिए हिंदी एक भाषा भर नहीं है वह मेरी शिक्षा है मेरी चेतना है और मेरे जीवन की निरंतर चलती हुई यात्रा है।

बृजेश मिश्रा
सहायक श्रेणी द्वितीय (राजभाषा)
मण्डल कार्यालय, अमृतसर

क्या यह, तुम्हारा अच्छा रुपईया?

जेबों की गर्मी, बढाता रुपईया
इंसा की कीमत, घटाता रुपईया
शिक्षा को धंधा, बनाता रुपईया
गांव वीराना, करता रुपईया
काला रुपईय, गोरा रुपईया
क्या यही, तुम्हारा अच्छा रुपईया?

गिरता रुपईया, उठता रुपईया
गिराता रुपईया, उठाता रुपईया
रिश्तों में खटास, मिलाता रुपईया
नैतिक-अनैतिक, बनाता रुपईया
क्या यही, तुम्हारा अच्छा रुपईया?

गरीबों का मजाक, बनाता रुपईया,
गरीबी की खाई, बढाता रुपईया,
जरुरत को अय्यासी, बनाता रुपईया,
जरुरत का तमाशा, बनाता रुपईया,
क्या यही, तुम्हारा अच्छा रुपईया?

बुद्धि को कुंद, करता रुपईया
सेहत को रद्दी, बनाता रुपईया
अन्नदाता की मौत, का कारण रुपईया
बाजारों में मिलावट, मिलाता रुपईया
क्या यही, तुम्हारा अच्छा रुपईया?

दादी की कहानी, छुड़ाता रुपईया
अन्नदाता की मौत, का कारण रुपईया
बाजारों में मिलावट, मिलाता रुपईया
क्या यही, तुम्हारा अच्छा रुपईया?

जिस्मों का धंधा, कराता रुपईया
माई का दूध, घटाता रुपईया
इंसान से हैवान, बनाता रुपईया
आंखों पे पर्दा, लगाता रुपईया
क्या यही, तुम्हारा अच्छा रुपईया?

उषा मीना
प्रबंधक (परिचालन)
मंडल कार्यालय, उदयपुर

मुझे आदत है.....

क्या करूं मेरी आँखों में आंसू नही आते
क्यूंकि मुझे आदत है गम छुपाने की,
किसी के गम भी नही देखे जाते
मुझे आदत है उन पर मरहम लगाने की।

मैंने अक्सर लोगों को घुटते देखा है
दर्द छिपाकर मुस्कुराते देखा है,
मैं कैसे रहूँ भला उनकी तरह
मुझे तो आदत है खुलकर जिए जाने की।

अपने कहे को भूल जाते हैं लोग
किसी के भावों की कद्र नहीं यहाँ
कहकर मुझसे मुकरा ना गया
मुझे तो आदत है वादा निभाने की ।

फूल मुझसे ना तोडा गया
खौफ काँटों का नही उसकी चोट का था,
कैसे उजाड़ू भला मैं चमन को
मुझे तो आदत है बगिया बसाने की।

अभाव जीवन का सच है होता
हर मनचाही चीज़ नही मिला करती,
जो नही मिला उसका गम नही
मुझे आदत है मिलने का जश्न मनाने की।

अपनों में लगाव बहुत होता है
पर रिश्तों में टकराव भी होता है,
मैंने ना चाहा उलझन को बढ़ाना
मुझे तो आदत है अक्सर झुक जाने की।

तन्हाई का अपना नशा होता है
भीड़ से बेहतर अकेले चलने का मजा होता है,
कोई साथ ना दे तो कोई गम नही
मुझे तो आदत है अपना मन बहलाने की।

गिरकर हार माँ लेना मेरी फितरत नही
दुनिया हंसती है तो हंसती रहे,
एक ठोकर मेरे निश्चय को नही बदल सकती
मुझे तो आदत है उठने का हौसला जगाने की।

अपने कलम से मैं हर बात लिखती हूं

मोनिका राठी
सहायक श्रेणी तृतीय (तक.)

बरसात लिखती हूँ, खुशी की सौगात लिखती हूँ!
हसीन ख्वाबों से भरी तन्हाई की रात लिखती हूँ!!
ना कोई कवियत्री हूँ, ना ही कोई नामचीन शायर हूँ
लब्जो को सजाकर दिल की हर बात लिखती हूँ!!
अपने कलम से मैं हर बात लिखती हूं

पैसे से कोई कहे गरीब, उसे बदनसीब लिखती हूँ!
कागज के पीछे जो दौड़े उसको गरीब लिखती हूँ!!
रब देता हम सबको सहारा, अपना कर्म करो बस
मिलता जो भी जीवन में उसको नसीब लिखती हूँ!!
अपने कलम से मैं हर बात लिखती हूं

सही बात लिखती हूँ, भूखे-नंगों के साथ लिखती हूँ!
दूध के लिए तडपते बच्चे का अहसास लिखती हूँ!!
तथाकथित गरीबों के मसीहा रहते शीश महलों में
कर वादे जो भूल गए, उनको अय्यास लिखती हूँ!!
अपने कलम से मैं हर बात लिखती हूं

आतंक को धर्म बनाये हुए दुर्दान्तो पर लिखती हूँ!
स्वम्भू ज्ञानी बनते मठाधिस-महंतो पर लिखती हूँ!!
दिखे कोई महात्मा शीश झुकाती हूँ कदमो में! पर
बेटियो की अस्मत लुटते ढोंगी संतो पर लिखती हूँ!!
अपने कलम से मैं हर बात लिखती हूं

जन-जन को खाता भ्रष्टाचार एक मर्ज लिखती हूँ!
किसान का दर्द लिखती हूँ, अपना फर्ज लिखती हूँ!!
कलम से देती सलामी भारत के जाबांज सपूतो को
उनके बलिदानी लहूँ का कितना है कर्ज लिखती हूँ!!
अपने कलम से मैं हर बात लिखती हूं

न हिन्दू लिखती हूँ, न मुसलमान लिखती हूँ!
शंकर हो या सत्तार लहूँ एक सामान लिखती हूँ!!
मै गीता बाइबिल कुरान नहीं पढ़ पायी तो क्या
देती मोहब्बत का पैगाम वहीँ किताब लिखती हूँ!!
अपने कलम से मैं हर बात लिखती हूं

आयुष कुमार
सहायक श्रेणी तृतीय (आगार)
मंडल कार्यालय उदयपुर

हौसलों की उड़ान

उठ पग को आगे बढ़ा
बस मंजिल कुछ ही दूर है।
न रहे कोई तुझसे आगे, तू इतनी मजबूत है
इसी डगर पर बड़ी चली जा।
तेरे साथ स्वयं जुनून है।

उठ पग को उठा मंजिल अभी तो दूर है।
विंध्य हिमाचल से विशाल तेरी हिम्मती शमशीर है।
उठ चली जा बिना रुके।
थकना तेरा फिजूल है।

इन कठिनाइयों से लंबी तेरे मन की जंजीर है।
तोड़ बेड़ियां , खोल बेड़ियां मंजिल अभी तो दूर है।
आगे बढ़ तू डगर डगर तेरी ये जंजीर है।

चल उठ चली जा एक सांस में तू इतनी मजबूत है।
जो रोके तुझे अंदर की सांसें, उने लहू का जुनून बता।
तू आगे बढ़ उसी डगर जो मंजिल का हैं घर पता।
अब तू आगे जाएगी, मन के दुश्मन को मार भगाएगी।
तू परिभाषा मजबूती की, तू ही बेमिसाल है।
चल उठ आगे बढ़ डगर पे तू नारी जाबाज़ है।

राम चन्द्र मीना
सहायक श्रेणी प्रथम (सामान्य)
मण्डल कार्यालय उदयपुर

जागरूक मतदाताः जनतंत्र का प्रहरी

प्रस्तावना: जनतंत्र में मतदाता की भूमिका और प्रहरी की अवधारणा का परिचय। जागरूक मतदाता जनतंत्र का प्रहरी है क्योंकि वही देश के भविष्य की दिशा तय करता है एक सजग नागरिक जो उम्मीदवारों और नितियों को समझकर वोट डालता है वह लोकतंत्र की नींव मजबूत करता है, भ्रष्टाचार को रोकता है, और विकास को बढ़ावा देता है जिससे देश उन्नति के पथ पर अग्रसर होता है इसलिए हर नारिक को वोट के अधिकार का जिम्मेदारी से प्रयोग करना चाहिए, क्योंकि जागरूक वोट ही सशक्त लोकतंत्र की कंजी है जागरूक मतदाता ही लोकतंत्र का सच्चा प्रहरी होता है।

1. लोकतंत्र में जनता - लोकतंत्र जनता का जनता के द्वारा और जनता के लिए शासन है और इस शासन प्रणाली का मूल आधार है इसके नागरिक, विशेषकर जागरूक मतदाता एक जागरूक मतदाता वह व्यक्ति है जो न केवल मतदान करता है बल्कि मतदान से पहले उम्मीदवारों, उनकी नीतियों और चुनावी मुद्दों पर गहन शोधन करता है बल्कि विवेकपूर्ण राय पर गहन शोध करता है वह जनतंत्र का प्रहरी पारदर्शी और जवाबदेह बनाती है।

2. लोकतंत्र में जनता का महत्व - जनता की शक्ति लोकतंत्र में जनता ही सर्वापरि होती है मतदाता अपने वोट की शक्ति से सरकारों को चुनते है और हटाते है यह शक्ति उन्हें शासन-प्रशासन कार्यो के प्रति जवाबदेह बनाती है इससे नेता अपने वादों और कार्यों के प्रति जवाबदेही की मांग करते है जो समाज के हित में हो, न कि केवल व्यक्तिगत लाभ के लिए।

3. जागरूक मतदाता की विशेषताऐं - जागरूक मतदाता केवल सूचनाओं के विश्लेषणः केवल नारों पर नहीं बल्कि उम्मीदवारों के पिछले रिकार्ड, उनकी शैक्षणिक योग्यता, वित्तीय स्त्रोतों और प्रस्तावित योजनाओं का गहराई से अध्ययन करना होता है, जागरूक मतदाता विवेकपूर्ण निर्णय, भावना या प्रलोभनों में बहकर वोट नहीं करता है वह देश के दीघ्रकालिक हित को ध्यान में रखकर निर्णय लेता है। जागरूक मतदाता अपने मत से ईमानदार प्रत्याशी साफ छवि वाले को चुनता है वह अपने मत से समाज के कमजोर वर्गो में शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, सुरक्षा आदि मुद्दों पर ध्यान केन्द्रित करता है।

4. जागरूक मतदाता जनतंत्र को मजबूती कैसे देता है - जागरूक मतदाता भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाता है जब जनता जागरूक होकर वोट करती है तो भ्रष्ट नेताओं के चुनाव जीतने की सम्भावना कम हो जाती है इससे भ्रष्टाचार पर अंकुश लगता है एवं सुशासन की स्थापना होती है जो एक ईमानदार, सक्षम और जनहितेषी और सुशासन विकास को बढ़ावा दिया जाता है जिससे देश में समग्र विकास होता है।

5. उपसंहार - लोकतंत्र में मतदाता की भूमिका और प्रहरी एक अतिआवश्यक अंग माना गया है। मतदाता जागरूता का अर्थ केवल वोट डालना ही नहीं बल्कि उम्मीदवारों की पृष्ठभूमि, गतिविधियाँ, नीतियाँ आदि का ध्यान रखता है मतदाता भ्रष्टाचार और कुशासन को रोकता है एक मजबूत लोकतंत्र और सफल लोकतंत्र के लिए जागरूक मतदाताओं की निरन्तर आवश्यकता है जनप्रतिनिधित्व अधिनियम 1951 भारतीय लोकतंत्र की विधि और संस्थागत नींव है। इसके माध्यम से चुनावी आचरण को नियमबद्ध किया एवं भारत ने विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र की स्थायी विशेषता बनाया।

राजेन्द्र प्रजापत
सहायक श्रेणी द्वितीय (राजभाषा)
मण्डल कार्यालय, अलवर

रंगो का मौसम

रंगों का मौसम है फिर.....
रंगों का मौसम है फिर भी, क्यों बेरंग पड़े हो तुम।
भागी जाती दुनिया धुन में, फिर भी अलमस्त खड़े हो तुम।।

माना की बेड़ी अटी पड़ी, जीवन जंगल की राहों में।
पर उल्लासों को छोड़ उदासी क्यों भरते हो बाँहो में।।
बाँहो में स्थिरता समेट क्यूँ जड़ की भांति गड़े हो तुम।
रंगो का मौसम.....

बाहों को शक्तिपुंज बना, कर गर्जन दसों दिशाओं में।
बेसुध गलियों का छोड़ मोह, आ घुल जा मस्त फिजाओ में।।
भूल गए आमंत्रण उनका? जिनके लिए लडे हो तुम।
रंगो का मौसम.....
रंगीला फागुन बुला रहा, आ रम जा हंसी ठिठोली में।
दीवानों की इस टोली में, उल्लासों की रंगोली में।।
हीन भाव मन से निकाल, सोचो की बहुत बड़े हो तुम।
रंगो का मौसम है.....

हितेश चोरडिया
सहायक श्रेणी तृतीय (राजभाषा)
मंडल कार्यालय, उदयपुर

राजभाषा : प्रशासन की आत्मा और राष्ट्र की आवाज

राजभाषा केवल कार्य-संपादन का माध्यम नहीं होती, वह किसी राष्ट्र की चेतना, संस्कार और संवेदनाओं की अभिव्यक्ति होती है। भारत जैसे बहुभाषी देश में हिंदी को राजभाषा का स्थान इसलिए दिया गया है, क्योंकि यह देश के एक बड़े वर्ग को जोड़ने वाली सहज, सरल और आत्मीय भाषा है। राजभाषा के रूप में हिंदी प्रशासन और जनता के बीच सेतु का कार्य करती है।

"जिस भाषा में शासन बोलता है, उसी भाषा में जनता का विश्वास आकार लेता है।"

कार्यालयीन परिवेश में राजभाषा हिंदी का प्रयोग केवल नियमों की पूर्ति तक सीमित नहीं होना चाहिए। जब किसी फाइल पर हिंदी में टिप्पणी लिखी जाती है, जब कोई आदेश या सूचना हिंदी में जारी होती है, तब वह भाषा जीवंत हो उठती है। हिंदी में कार्य करने से न केवल भाव स्पष्ट होते हैं, बल्कि कार्य के प्रति अपनापन भी विकसित होता है।

"हिंदी में किया गया कार्य केवल लिखा नहीं जाता, वह जिम्मेदारी के साथ निभाया जाता है।"

आज के डिजिटल युग में यह धारणा बदल रही है कि हिंदी में काम करना कठिन है। यूनिकोड तकनीक, हिंदी सॉफ्टवेयर और ई-ऑफिस प्रणाली ने हिंदी को तकनीकी रूप से सक्षम बना दिया है। अब हिंदी केवल काग़ज़ों तक सीमित नहीं रही, बल्कि ई-मेल, पोर्टल, डैशबोर्ड और रिपोर्टों में भी प्रभावी रूप से प्रयुक्त हो रही है।

"तकनीक से जुड़कर जब हिंदी आगे बढ़ती है, तब वह भविष्य की भाषा बन जाती है।"

राजभाषा के प्रयोग से प्रशासन में पारदर्शिता बढ़ती है। जब आम नागरिक अपनी भाषा में सरकारी पत्र, आदेश या सूचना समझ पाता है, तब शासन में विश्वास सुदृढ़ होता है। यही राजभाषा की वास्तविक सफलता है—जनसंपर्क, जनविश्वास और जनसहभागिता।

"राजभाषा का उद्देश्य शासन को ऊँचा बनाना नहीं, जनता के निकट लाना है।"

राजभाषा का सम्मान केवल हिंदी पखवाडा या कार्यशालाओं तक सीमित न रहे, बल्कि यह हमारे दैनिक कार्य-व्यवहार का स्वाभाविक हिस्सा बने। प्रत्येक कर्मचारी का यह दायित्व है कि वह हिंदी में कार्य करने का प्रयास करे और आवश्यकता पड़ने पर दूसरों को भी प्रेरित करे।

"जब हिंदी दायित्व बनती है, तब वह बोझ लगती है; जब संस्कार बनती है, तब शक्ति।"

अंततः यह कहा जा सकता है कि राजभाषा हिंदी कोई औपचारिक बाध्यता नहीं, बल्कि राष्ट्र को एक सूत्र में बाँधने वाली शक्ति है। जब प्रशासन की भाषा जनता की भाषा बन जाती है, तभी सच्चे अर्थों में सुशासन की परिकल्पना साकार होती है।

"राजभाषा वही सफल है, जिसमें शासन और जन दोनों स्वयं को बोलता हुआ महसूस करें।"

रजनी मिश्रा
सहायक श्रेणी द्वितीय
(राजभाषा)
आंचलिक कार्यालय (उत्तर)

नादान परिंदा

उड़ना मुझे है घने बादलों के पार,
जाना मुझे है उस लाल खिलौने के पास
खिलखिलाती उड़ते हुए जाती हूँ मैं,
पर जितना जाती हूँ नजदीक उसके
हो जाता है वो दूर उस पार।
डराता है वो लाल रंग,
देता है चुनौती मुझे हर रोज़
पर मैं नहीं डरती...
मुझे छूकर आना है उस लाल रंग को,
इस आस के साथ देती मैं चुनौती उसको भी....
कहता बादल मुझसे, पंख होंगे रंगीन से राख
यदि तू जाएगी उसके पास....
वह नहीं है खिलौना,
है वह आग का गोला,
मैंने न देखा तुझसा भोला....
मैं कहती, हो सकती हूँ मैं भोली
पर अंदाज है मेरी निराली
उसे छूने की सतत इच्छा
एवं प्यार से पिघला दूँगी उसे मैं भोली।

ताप को आता है भाप बनाना मुझे, अंदाज है मेरे अनोखे
जलूँगी मगर रुकूँगी नहीं !
छू नहीं सकती तो क्या ? करीब तक जाऊँगी उसकी।
सोच है ऊंची ख्वाब है अनोखे,
रोके से भी न रुके, ऐसे अंदाज हैं मेरे।
दिन-रात न देखूँगी बादल-बरसात न देखूँगी
उड़ान मैं अपनी निरंतर रखूंगी ।
खरगोश नहीं कछुआ है बनना
लोगों का अंदाजा अपने लिए बदलना ।
हूँ मैं जीव नहीं जंगल की,
मैं तो हूँ उस गगनचुंबी की
हूँ मैं नादान परिंदा इस ग्रह की
लेकिन जाना मुझे उसपार,
अपनी नादानियों के साथ करना है मुझे कुछ खास।

सुबोध कुमार तांती
सहायक श्रेणी-द्वितीय
(राजभाषा)
मण्डल कार्यालय, धर्मशाला

बसंत जब आती है

बसंत जब आती है,
पीले-पीले फूल खिलती हैं,
धरती जैसे मुस्कुराती है,
हर डाली पर रंग मिलती हैं।
रंग-बिरंगे फूल खिलते हैं,
मन में नई उमंग मिलते हैं,
मंद पवन जब गाल सहलाए,
प्रकृति भी गीत सुनाए।
कोयल कुहक-कुहक पुकारे,
मधु की गंध दिशाओं में उतरे,
नदियों में लहरें गुनगुनाएं,
जैसे सारा जग हर्षाए।
खेतों में सरसों झूमे,
हरियाली के वस्त्र पहन झूले,
मन में प्रेम की धारा बहती,
बसंत में दुनिया नयी लगती।
बसंत जब आती है,
जीवन फिर से खिल जाती है,
हर दिल में आशा जगती है,
हर सांस में कविता बनती है

चित्रकारी

तेजस्विनी सपावत
पुत्रीः श्री पुखराज मीना,
सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा)
भा.खा. नि., आं.का. (उ.)

प्रकृति का संतुलन

अभिषेक
सहायक श्रेणी-द्वितीय (सामान्य)
मण्डल कार्यालय, धर्मशाला

सृष्टि में है हर चीज संतुलित, सब का है योगदान बराबर
जितना लो, उतना ही इसे वापस दो, यही है जीवन नियम परस्पर।
सूर्य के ताप से जीवन फले-फूले, देते पेड़ प्राण-वायु,
वायु के कारण जल-चक्र है बंता, जिससे चलती सब ऋतु।

जब तक है सब अपने क्रम में, तब तक चले धरती पर जीवन,
पर जब कोई सीमा लांघे, तो हो जाती अस्थिरता भीषण।
लगता है मानव को ऐसा, उसके हाथ में है कुदरत की डोर,
बनकर विधाता बदल रहा है, धरती की काय हर छोर।
जबसे मौसम का संतुलन बिगड़, आ रहा है संकट बार-बार,
जलवायु है बदल रही, टूटा जीवन का आधार।
पेड़ कटे तो सांस रुकी, नदी सूखी, रूठा है मौसम,
जीव जन्तु हुए विलुप्त, हो गया सबका वंश संहार।

पर मानव है भूल रहा कि, सृष्टि के अधीन वह भी है,
फूटेगा जब क्रोध कुदरत का, आणि विपदा उस पर भी है।
तो आओ मिलकर यह प्रण करें, संतुलन और न बिगड़ने देंगे,
धरती माँ की गोद को अब हम, सदा हरियाली से भर देंगे।

संतुलन नहीं केवल एक शब्द, ये है जीवन का आधार,
सहेजोगे इसको तब ही होगा सुखमय शांत ये संसार।
प्रकृति के संग जीना सीखें, निभाएँ अपनी जिम्मेदारी,
समझें जीवन का मोल नहीं तो, है अगली हमारी ही बारी।
वृक्ष लगाएँ, जल बचाएँ, न करें प्रकृति का अपमान,
प्रकृति के संतुलन से ही, गाएगा जीवन खुशहाली-गान।

धुंध के दो संसार

अभिशेख कु. साव
सहायक श्रेणी तृतीय
(राजभाषा)
आंचलिक कार्यालय (उत्तर)

शहर की धुंध में पहचानें खो जाती हैं अक्सर,
गांव की सर्दी में धुंध भी किस्से कह जाती है।
अलाव की आँच में रिश्ते खुद ही गुनगुनाते,
हीटर की गर्मी भी शहर में तन्हा रह जाती है।
शहर के शीशों पर जमी बर्फ चुप दूरी कहती,
गांव की खिड़की पर ओस अपनापन लिख जाती है।
शहर में कोहरे से डर, सड़कों की चाल थकी-सी,
गांव के कोहरे में खेतों की शान झलक जाती है।

शहर की सुबह अलार्म की सख़्त पुकार से जागे,
गांव की सुबह मुर्गे की बोली में सपने सजाए।
शहर की चाय कपों में उलझी भागदौड़ का रूप,
गांव की चाय कुल्हड़ में आज़ादी बन इठलाए।
शहर की छतें ठंडी हैं, रिश्ते भी सिमट जाते,
गांव की चौपालों में गर्म दुआएँ बस जाती हैं।
गांव की सर्दी कम नहीं—वह तो एक एहसास है,
दिल से जुड़ी, आत्मा को छूती पहचान बन जाती है।

विशेष हिंदी कार्यशाला, वाराणसी

दिनांक 10 व 11 सितंबर 2025 को भारतीय खाद्य निगम, आंचलिक कार्यालय (उ.) एवं मंडल कार्यालय, वाराणसी के संयुक्त तत्वावधान में उत्तर अंचल के कार्यालय प्रमुखों के लिए दो दिवसीय विशेष हिंदी कार्यशाला का आयोजन वाराणसी (उत्तर प्रदेश) में किया गया। इस दौरान क्षेत्रीय कार्यालय, लखनऊ की गृह पत्रिका के प्रथम अंक का विमोचन माननीय कार्यकारी निदेशक (उ.), महाप्रबंधक (क्षेत्र) व अन्य गणमान्य अतिथियों के कर-कमलों द्वारा किया गया। साथ ही काव्य-संध्या का आयोजन किया गया।

कवि सम्मेलन

हिंदी पखवाड़ा 2025 के दौरान दिनांक 23.09.2025 को भव्य हिंदी कवि-सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में कवि श्री आशुतोष अग्निहोत्री, भा.प्र.से., अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक, भारतीय खाद्य निगम की सुंदर कविताओं ने पूरी सभा को मंत्रमुग्ध कर दिया। उनका साथ दिया कवि श्री बुद्दिनाथ मिश्रा, डॉ. सुरेश व रामायण धर द्विवेदी ने।

हिंदी पखवाड़ा 2025 की झलकियां

नराकास (नोएडा) उपक्रम छमाही बैठक

भारतीय खाद्य निगम, आंचलिक कार्यालय (उत्तर) की अध्यक्षता में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम), नोएडा की छमाही बैठक का आयोजन दिनांक 16.02.2026 को आंचलिक कार्यालय (उत्तर) के सभागार में आयोजित की गई। इस बैठक में सदस्य कार्यालयों के प्रतिनिधियों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता करते हुए अपने महत्वपूर्ण विचार एवं सुझाव प्रस्तुत किए।